आदिम अग्नि

आदिम अग्नि

श्याम मोहन अस्थाना

अभिव्यक्ति प्रकाशन
दिल्ली-32

(आकाशवाणी के नाटक सप्ताह में प्रसारित नाटक)

© श्याम मोहन अस्थाना

मूल्य : 65.00 रुपये

प्रथम संस्करण : 1996

प्रकाशक

अभिव्यक्ति प्रकाशन

29/61; गली नं० 11 विश्वासनगर

दिल्ली-110032

आवरण : विजेन्द्र सिंघल

मुद्रक : शान प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

AADIM AGNI by Shyam Mohan Asthana

Rs. 65.00

क्रम

आदिम अग्नि ... 9
मुजाहिद ... 47
ज़मीन, जो किसी की नहीं है ... 73

आदिम अग्नि

ਜੀਣ ਸਲੀਕਾ

आदिम अग्नि

(मानवीय संबंधों की जड़ों को खोजता एक मनोवैज्ञानिक एकांकी)

पात्र-परिचय

1.	चंद्र माधव	एक चित्रकार	30 वर्ष
2.	मनीषा	एक पत्रकार	22 ,,
3.	सुषमा	मॉडल	26 ,,
4.	सीमा	नर्तकी	28 ,,
5.	विमला	वेश्या	26 ,,
6.	संपादक		50 ,,
7.	पुलिस इंस्पेक्टर		40 ,,
8.	मेंटल हास्पिटल का डाक्टर		45 ,,
9.	रतना	दासी	30 ,,

(1)

स्थान : चन्द्रमाधव का स्टुडियो।
समय : अपराह्न 4 बजे।

सुषमा : माधव !

माधव : देखो सुषमा, मुझे इस तरह डिस्टर्ब मत करो। सब कुछ गड़-वड़ हो जाता है।

सुषमा : पूछना चाहती थी कि अभी कितनी सिटिंग जरूरी है।

माधव : शायद यह आखिरी सिटिंग हो। लेकिन अभी मैं कुछ नहीं

कह सकता।

सुषमा : क्या मैं एक शाल ओढ़ लूं ?

माधव : क्यों, क्या ठंड लग रही है ? (जोर से) रतना !

(रतना का प्रवेश)

रतना : जी मालिक !

माधव : व्हिस्की की बोतल और दो प्याले ला !

सुषमा : नो-नो, नो ड्रिंक फॉर मी ! मुझे इसकी जरूरत नहीं है।

माधव : ओ०के०। रतना, सिर्फ मेरे लिए एक डबल पेग।

(रतना का प्रस्थान)

सुषमा : माधव, बहुत ड्रिंक कर रहे हो ?

माधव : मुझे नहीं, मेरी पेंटिंग को एक तल्खी की जरूरत है—एक ऐसी तल्खी, जो आदमी को ऊपर से नीचे तक चीर दे।

सुषमा : पता नहीं, इस बार कैसा रंगों का खेल रचा रहे हो ! मेरे पल्ले तो कुछ नहीं पड़ता।

(रतना का प्रवेश)

रतना : लीजिये मालिक !

(रतना शराब ढाल कर देती है)

(माधव शराब का एक घूंट लेता है)

माधव : मैं आदमी का सही चेहरा ड्रा कर रहा हूँ।

सुषमा : क्या मतलब ?

माधव : जंगल के बीच जलती हुई आग···इसके दोनों तरफ आदिम स्त्री-पुरुष का एक नग्न जोड़ा, आग में भुनते हुए नरमांस की प्रतीक्षा में बैठा हुआ—यही आदमी का सच्चा चेहरा है।

सुषमा : कितना भयानक दृश्य !

माधव : जानती हो सुषमा, यह आग सिर्फ जंगल में लकड़ियों की आग नहीं। इस आदिम युगल की आंखों में भी वही आग है—भूख, भय और नफरत की आग !

सुषमा : नहीं माधव, यह सच नहीं है !

माधव : आज इस आदिम युगल ने साथ मिलकर शिकार किया है।

कल ये एक-दूसरे की हत्या कर भुनते हुए मांस का इंतजार कर सकते हैं।

सुषमा : माधव, तुम मुझे डराना चाहते हो ?

माधव : नहीं, मैं तुम्हें डराना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे नफ़रत करो !

सुषमा : लेकिन क्यों ?

माधव : मैं इस आदिम लड़की की आँखों में नफरत की आग देखना चाहता हूँ। मैंने कई रंगों का प्रयोग किया पर हर बार इसकी आँखों में एक लिजलिजा गीलापन उतर आता है।

सुषमा : जिसे तुम लिजलिजा गीलापन कहते हो वह ममता का प्रति-बिम्ब हो सकता है।

माधव : मुझे ममता नहीं चाहिए ! मुझसे नफरत करो ! मैं उस नफरत को अंकित करना चाहता हूँ।

सुषमा : यह मुझसे नहीं हो सकेगा।

माधव : लो एक पेग शराब पियो ! भूल जाओ सब कुछ ! मुझसे नफ-रत करो ! मैं तुम्हारी नफरत चाहता हूँ !

सुषमा : माधव, मैं शराब में धुत होकर भी तुमसे नफरत नहीं कर सकूँगी।

माधव : लेकिन क्यों ?

सुषमा : क्योंकि मैं तुम्हारे बच्चे की माँ बनने वाली हूँ।

माधव : यह झूठ है !

सुषमा : शक-शुबहे की कोई गुंजायश नहीं है। लेडी डाक्टर ने कन्फर्म कर दिया है।

माधव : सुषमा, तुम मुझे ब्लैकमेल करना चाहती हो ?

सुषमा : माधव, मैंने तुम्हारे साथ सात फेरे भी नहीं किये हैं। दुनिया की किस अदालत में मैं तुम्हारे खिलाफ फरियाद कर सकती हूँ ?

माधव : क्या तुम्हारे पास इस बात का सबूत है कि मैं तुम्हारे होने वाले बच्चे का पिता हूँ ?

सुषमा : कोई भी औरत इस बात का क्या सबूत दे सकती है ?

माधव : लेकिन मैं पिता बनना नहीं चाहता । मैं परिवार नहीं चाहता । इस चित्र को देखो । मैं ही वह आदिम पुरुष हूँ जो भुनते हुए नरमांस की प्रतीक्षा में बैठा है ।

सुषमा : माधव, अगर सब तुम्हारी तरह आत्मकेंद्रित हो जाते तो यह सृष्टि नहीं चलती ।

माधव : तुम किस सृष्टि की बात करती हो ? कहीं कोई सृष्टि नहीं चल रही है ।

सुषमा : तुम समाज को कैसे नकार सकते हो ! दुनिया के करोड़ों लोग सुखी पारिवारिक जीवन बिता रहे हैं ।

माधव : कहीं कोई समाज नहीं है। इन कांक्रीट के जंगलों में हरेक आदमी शिकार की घात में उकड़ूँ बैठा हुआ है ।

सुषमा : ऐसा मत कहो, माधव ! मैंने तुमको सच्चे हृदय से प्यार किया है !

माधव : प्यार का नाम मत लो ! तुमने मेरी शारीरिक जरूरतें पूरी की हैं। मैंने भी तुम्हें खाना, कपड़ा और छत का साया दिया है ।

सुषमा : मैं माँ बनना चाहती हूँ, माधव ! मेरे सिर पर अपना हाथ रख दो !

माधव : तुम मेरी मॉडल हो, सुषमा ! हमारे और तुम्हारे सम्बन्धों की यही शुरुआत और यही अंत है ।

सुषमा : नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता । प्यार के नाम पर, ममता के नाम पर, मेरी कोख से जन्म लेने वाले शिशु के नाम पर तुम्हें मुझे स्वीकार करना ही होगा !

माधव : सुषमा, हमारे-तुम्हारे सम्बन्ध अब बिलकुल निचुड़ गये हैं । मैं तुम्हें एक महीने की नोटिस देता हूँ । तुम जब चाहो, जा सकती हो ।

सुषमा : नहीं, माधव नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता ।

माधव : सुषमा, तुम्हें मालूम है कि मुझे यह लिजलिजी भावुकता बिलकुल नापसन्द है। अगर मुझसे कुछ शिकायत हो तो यह

रिवाल्वर लो ! कर दो मेरी हत्या ! मैं कहता हूँ—शूट करो !

सुषमा : नहीं, मैंने तुमको प्यार किया है । जो प्यार करता है वह हत्या नहीं कर सकता ।

माधव : तुम मुझसे नफरत करो ! मैं प्यार और ममता नहीं झेल सकता ! नफरत झेल सकता हूँ !

सुषमा : क्या यह तुम्हारा आखिरी फैसला है ?

माधव : हाँ, मैंने फैसला कर लिया है । पर तुम्हें सोचने के लिए अभी वक्त है ।

सुषमा : माधव !

माधव : लो शराब पियो । भविष्य को भूल जाओ । आज के क्षण में जिओ ।

सुषमा : माधव, तुम इंसान नहीं, वहशी हो ।

माधव : सिर्फ मैं नहीं, हम सब वहशी हैं । मैंने ही सबसे पहले इंसान के रेशमी लिबासों और रंगीन नकाबों को चीरकर उसको नंगा किया है ।

सुषमा : माधव, हरेक आदमी की कुछ न कुछ जिम्मेवारी होती है ।

माधव : जिम्मेवारी ! इस शब्द का कोई अर्थ नहीं है । लो शराब पियो और मुझसे नफरत करो । मैं तुम्हारी भूख, भय और नफरत को अंकित करना चाहता हूँ ।

सुषमा : माधव, तुम एक हृदयहीन पशु हो !

माधव : लो पियो सुषमा !

(शराब के ढाले जाने की आवाज)

(प्रकाश बुझता है)

(2)

स्थान : चन्द्र माधव का ड्राइंग रूम ।

समय : संध्या 5 बजे ।

(कॉलबेल की घंटी बजती है)

(दरवाजा खुलता है)

मनीषा : सुनिये, क्या चन्द्रमाधव जी यहीं रहते हैं ?

सुषमा : जी हाँ, आपको क्या काम है ?

मनीषा : जी काम तो कुछ खास नहीं है। मैं मनीषा हूँ, उनके आर्ट की फैन। इसे एक सोशल कॉल समझ लीजिये।

सुषमा : माधव जी अपने स्टुडियो में हैं। स्टुडियो में वे किसी से मिलना नहीं पसंद करते।

मनीषा : स्टुडियो से कब तक खाली हो जायेंगे ?

सुषमा : कोई ठीक नहीं है। एक बार वे एक पेंटिंग लेकर तीन दिन तक बैठे रह गये।

मनीषा : आश्चर्य है ! हाँ, क्या मैं आपका परिचय पूछ सकती हूँ ?

सुषमा : मैं सुषमा हूँ—माधव जी की आर्ट मॉडल !

मनीषा : ओ येस ! अब याद आया। माधव जी की नयी पेंटिंग में आप मॉडल बनी हैं।

सुषमा : क्या आपने माधव जी की 'आदिम अग्नि' को देखा है ?

मनीषा : ओ येस, कल अकादमी की आर्ट गैलरी में पहली बार प्रदर्शित हुई। सिम्पली सुपर्ब ! दूसरी किसी पेंटिंग से इसकी तुलना नहीं की जा सकती !

सुषमा : ओ थैंक यू वेरी मच !

मनीषा : लेकिन एक बात कहूँगी। मुझे माधव जी आर्ट वर्ल्ड के 'ऐंग्री यंग मैन' मालूम पड़ते हैं।

सुषमा : आप ऐसा क्यों सोचती हैं ?

मनीषा : 'आदिम अग्नि' के पीछे एक अजीब आक्रोश है। आग में भुनता हुआ नरमांस और उसके इंतजार में बैठा हुआ आदिम युगल—क्या आदमी का यही सच्चा चेहरा है ?

सुषमा : यह तो अपना नजरिया है।

मनीषा : मैंने इतने तीखे रंगों का प्रयोग कभी नहीं देखा। माई गॉड ! इतना सुर्ख लाल रंग। लगता है कि जैसे पेंटिंग पर खून फैला दिया गया हो।

सुषमा : आपने पहचानने में गलती नहीं की है। वह खून का ही रंग है।

मनीषा : क्या मतलब ?

सुषमा : मेरे हाथ की पट्टी देख रही हैं न। उस पेंटिंग को मेरे खून की जरूरत थी !

मनीषा : ओ माई गॉड ! मुझे माफ कीजिये ! मैं हर्ट करना नहीं चाहती थी !

सुषमा : नहीं, इसमें बुरा मानने की क्या बात है !

मनीषा : एक बात कहूँ, मिस सुषमा ! माधव जी के तीखे, क्रूर रंगों के बावजूद आपके चेहरे पर वह भाव नहीं आ सका।

सुषमा : आप किस भाव की बात करती हैं ?

मनीषा : मेरा मतलब है, एक आदिम आक्रोश, एक्सप्रेशन आफ वायलेंट हेट ! मेरे खयाल में उस आदिम लड़की के चेहरे पर बड़ा कोमल भाव है।

सुषमा : मैं नहीं समझी।

मनीषा : उस भाव को मैं ठीक शब्द नहीं दे सकती, पर वह नफरत नहीं है। वह एक आदिम औरत की सेक्स फीलिंग भी नहीं है। आप चाहें तो उसे प्यार कह सकती हैं। एक ऐसी औरत का प्यार जो अपने मर्द के बच्चे को जनने के लिए तैयार हो।

सुषमा : मिस मनीषा, आप अपनी सीमा से बाहर जा रही हैं !

मनीषा : नहीं, मैं कोई अपमानजनक बात नहीं कहना चाहती। आप बुरा न मानें तो एक बात पूछूँ !

सुषमा : पूछिये।

मनीषा : आप माधव जी की मॉडल हैं न ?

सुषमा : मैंने आपको अपना परिचय पहले ही दिया था।

मनीषा : हाँ दिया था। पर वह परिचय अधूरा था। आप सिर्फ एक मॉडल नहीं हैं। आप माधव जी को प्यार करती हैं—उतना प्यार जितना एक औरत एक मर्द से कर सकती है।

सुषमा : इस बात का सबूत ?

मनीषा : अगर माधव जी की पेंटिंग सच है तो आपका प्यार भी एक सचाई है।

सुषमा : कृपया इस विषय को छोड़ दीजिए।

मनीषा : अजीब बात है ! माधव जी के लिए आदिम आग नफरत की आग है। आपके लिए वही आग प्यार की आग है। दो आदमियों का नजरिया कितना भिन्न हो जाता है !

सुषमा : मिस मनीषा, आपने कभी प्यार किया है ?

मनीषा : कभी नहीं। मन की भूख से पेट की भूख अधिक तेज होती है !

सुषमा : अब अच्छा हो कि आप प्रेम के प्रवचन को बंद करें। मेरे खयाल में आपने मेरे साथ जरूरत से ज्यादा लिबर्टी ली है।

मनीषा : वेरी सॉरी ! देखिये मिस सुषमा, असल में मैं माधव जी से मिलने आयी थी।

सुषमा : माधव जी साधारणतया लोगों से मिलना पसंद नहीं करते।

मनीषा : किसी से तो मिलते ही होंगे।

सुषमा : हाँ मिलते हैं। माधव जी खूबसूरत और जवान लड़कियों से मिलना पसंद करते हैं।

मनीषा : माई गॉड, देखती हूँ कि सभी कलाकारों का एक ही हाल है। देखिये मैं अपने बारे में क्या कहूँ ! हाँ, जब दर्पण के सामने खड़ी होती हूँ तो दर्पण मुझसे कहता है कि मनीषा तुम जवान हो और शायद खूबसूरत भी।

सुषमा : मैं भी सोचती हूँ कि आपके पास खूबसूरती का पासपोर्ट है। लेकिन एक शर्त और है।

मनीषा : उसको भी कह डालिये।

सुषमा : आपको माधव की हरेक अराजक इच्छा पूरी करनी होगी। माधव के पास पहुँचने की यही सबसे बड़ी शर्त है।

मनीषा : गटअप ! तुम मुझे समझती क्या हो ! मैं तुम्हारी तरह रोटी और कपड़े के लिए अपनी इज्जत का सौदा नहीं कर सकती।

सुषमा : इतनी इज्जतवाली हो तो यहाँ आने की क्या जरूरत थी !

क्या तुमसे किसी ने नहीं कहा कि माधव एक बदचलन आदमी है !

मनीषा : मैं एक कला पत्रिका की आर्ट क्रिटिक हूँ। मैं माधव जी के बारे में एक परिचय-पत्र तैयार कर रही हूँ।

सुषमा : अच्छा तो तुम एक पत्रकार हो !

मनीषा : क्यों क्या हुआ ?

सुषमा : माधव जी भूल कर भी किसी पत्रकार से नहीं मिलते। शायद तुमने नहीं देखा। गेट पर ही एए बोर्ड लगा है—इस बंगले में पत्रकारों और कुत्तों का प्रवेश वर्जित है !

(प्रकाश बुझता है)

(3)

स्थान : 'कला संगम' का आफिस।

समय : संध्या 6 बजे।

संपादक : हलो मनीषा, क्या खबर है ?

मनीषा : जी, अकादमी आर्ट गैलरी में गयी थी। माधव जी की पेंटिंग्ज का रिव्यू लिख लिया है।

संपादक : माधव से मिली थी ?

मनीषा : नहीं सर, उनसे नहीं मिल सकी।

संपादक : उसको टेलीफोन किया था ?

मनीषा : मैं खुद उनके घर गयी थी। उनकी मॉडल सुषमा ने कहा कि इस घर में पत्रकारों और कुत्तों का प्रवेश वर्जित है।

संपादक : अजब आदमी है !

मनीषा : सर, क्या एक कलाकार की कला काफी नहीं है। हमें उसकी प्राइवेट लाइफ से क्या मतलब है !

संपादक : तुमने समुद्र में तैरते हुए हिम-खंड को देखा है ? उसका सिर्फ एक हिस्सा दिखाई पड़ता है। नौ बटा दस पानी में डूबा रहता है। एक कलाकार की कला भी ऐसी ही होती है।

मनीषा : लेकिन अगर कोई मिलने से बिलकुल इनकार कर दे तो क्या किया जा सकता है !

संपादक : लेकिन माधव ने कुछ फौरेन मैंगजीन्स को बड़े अच्छे इंटरव्यूज दिये हैं।

मनीषा : आप कहें तो मैं उन्हीं के आधार पर एक 'पेन प्रोफाइल' तैयार कर दूं।

संपादक : नहीं, हमारी 'कला संगम' एक सम्मानित पत्रिका है। हमारा अपना कवरेज होना चाहिए।

मनीषा : आप जैसा कहें।

संपादक : जानती हो, माधव की 'आदिम अग्नि' को इस साल बेस्ट पेंटिंग का एवार्ड मिलने वाला है।

मनीषा : जी, मैंने भी सुना है। 'आदिम अग्नि' हर तरह से एवार्ड के लायक है।

संपादक : 'कला संगम' के अगले अंक में माधव का एक शब्दचित्र जरूरी है। अगर एक इन्टरव्यू मिल जाता तो बस सोने में सोहागा हो जाता।

मनीषा : सर, मैं अधिक से अधिक एक बार और ट्राई कर सकती हूँ।

संपादक : वकअप ! देखो मनीषा, यह तुम्हारे लिए एक चैलेंज है।

मनीषा : पता नहीं, सर। सुनती हूँ कि वह लड़कियों से बहुत मिसबिहेव करता है। कुछ लोग तो कह रहे थे कि वह एक औरतखोर इंसान है।

संपादक : आदमखोर हो या औरतखोर इंसान हो, हरेक के पास एक कोमल बिन्दु होता है।

मनीषा : क्या कहूँ सर, मेरी भी कुछ सीमाएँ हैं।

संपादक : देखो मनीषा, माधव एक जीनियस है। हम उसे चाहें या न चाहें, उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते।

मनीषा : ठीक है सर, मैं कोशिश करूँगी।

संपादक : जानती हो मनीषा, एक आदमी औरतखोर क्यों हो जाता है ?

मनीषा : नहीं सर, इस विषय पर कभी विचार नहीं किया।

संपादक : उस आदमी को पहले प्यार नहीं मिलता। बाद में उसमें प्यार पहचानने की क्षमता खत्म हो जाती है।

मनीषा : हाँ सर, शायद ऐसा ही होता है!

संपादक : माधव ऐसा ही टूटा हुआ आदमी है। कहीं कोई चोट लगी है और एक दर्पण के हज़ार टुकड़े हो गये हैं।

मनीषा : मुझे तो बिलकुल एबनार्मल आदमी लगता है।

संपादक : दर्पण के टूटे टुकड़ों को एक-एक कर चुनना होगा। तब पूरा प्रतिबिम्ब उभरेगा।

मनीषा : ठीक है सर, जैसा आप कहेंगे, करूँगी।

संपादक : माधव ने एक अराजक जीवन जिया है। उसके सभी कोने साफ-सुथरे नहीं हैं।

मनीषा : जी, मैं नहीं समझी।

संपादक : माधव को जानना हो तो पुलिस स्टेशन जाओ और उसकी फाइल पढ़ो!

मनीषा : सर, आप पुलिस स्टेशन जाने को कह रहे हैं?

संपादक : हाँ, उसको जानने के लिए पुलिस स्टेशन जाना जरूरी है। इतना ही नहीं, तुम्हें वेश्याओं के कोठों पर भी जाना पड़ेगा। एकऐसा माधव है जो बराबर वेश्याओं के कोठों को विजिट करता है।

मनीषा : माई गॉड, क्या आदमी है!

संपादक : मुझे लगता है कि तुम्हें मेंटल हास्पिटल भी जाना पड़ेगा। सुनता हूँ कि उसकी एक प्रेमिका पागलखाने में अपने दिन काट रही है।

मनीषा : मुझे लगता है कि माधव आदमी नहीं एक खूँखार जानवर है।

संपादक : आदमी हो या जानवर—माधव इज ए ग्रेट आर्टिस्ट! और अभी तो उसके कैरियर की शुरुआत है।

मनीषा : कितना भी बड़ा कलाकार हो! मैं ऐसे आदमी से नफरत करती हूँ।

संपादक : तुम एक पत्रकार हो मनीषा। राम हो या रावण, तुममें हमेशा एक तटस्थता होनी चाहिए।

मनीषा : मैं क्या करूँ ! मैं तो माधव से मिलने गयी ही थी, पर उसकी मॉडल सुषमा ने नहीं मिलने दिया।

संपादक : तुम जानती हो, सुषमा सिर्फ एक मॉडल नहीं, माधव की प्रेमिका भी थी।

मनीषा : हाँ, मैंने भी यही अनुमान किया था। लेकिन अजीब तरह का पजेसिव लव है।

संपादक : तुमने सुषमा के बारे में लेटेस्ट न्यूज नहीं सुनी ?

मनीषा : नहीं, क्यों क्या हुआ ?

संपादक : सुषमा ने आत्महत्या कर ली। सभी अखबारों में उसकी फोटो छपी है।

मनीषा : माई गॉड ! पुअर सुषमा ! लेकिन यह आत्महत्या नहीं, हत्या है। इस हत्या के लिए माधव सेंट-परसेंट जिम्मेवार है। आई से दिस इज़ मर्डर—प्योर मर्डर !

(संगीत-वादन)

(4)

स्थान : एक पुलिस स्टेशन।

समय : संध्या 5 बजे।

मनीषा : सुनिये, आप टाउन थाना के इंचार्ज हैं ?

इन्स्पेक्टर : जी हाँ, मुझे इंस्पेक्टर चन्द्रदेव कहते हैं। मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

मनीषा : आप माधव जी को जानते हैं ?

इन्स्पेक्टर : कौन माधव जी, यू मीन माधव द आर्टिस्ट ?

मनीषा : जी हाँ !

इन्स्पेक्टर : क्यों क्या बात है ? खैरियत तो है ?

मनीषा : मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या माधव जी के नाम आपके पास

कोई फाइल है ? मेरा मतलब कि उसके क्राइम्स का रिकार्ड ?

इन्स्पेक्टर : क्या मैं आपका परिचय पूछ सकता हूँ ?

मनीषा : मेरा नाम मनीषा है। मैं आर्ट मैगजीन 'कला संगम' को रिप्रजेंट करती हूँ।

इन्स्पेक्टर : देखिये मिस मनीषा, माधव जी की कोई फाइल हमारे पास नहीं है। मेरे ख्याल में उसके क्राइम्स का कोई रिकार्ड भी नहीं है।

मनीषा : क्या आपको मालूम है कि माधव जी रंडियों के कोठों पर बराबर जाते हैं ?

इन्स्पेक्टर : जी, सुना तो मैंने भी है। एक बार पता भी लगाया। पता लगा कि वे चवन्निया रंडियों को सामने बिठाकर पेंट करते हैं। हम इसको कैसे रोक सकते हैं ?

मनीषा : यह तो सिर्फ एक कानूनी दृष्टिकोण है। क्या आपने नहीं सुना कि माधव जी लड़कियों के साथ मिसबिहेव करते हैं ?

इन्स्पेक्टर : संभव है। पर कोई लड़की कभी पुलिस स्टेशन तक नहीं आयी।

मनीषा : मैं आपको बताती हूँ। उन्होंने अपनी एक प्रेमिका से बुरी तरह मिसबिहेव किया। सुनती हूँ कि वह लड़की एक मशहूर डांसर थी। आज वह लड़की मेंटल हास्पिटल में अपने दिन काट रही है।

इन्स्पेक्टर : देखिये मिस मनीषा, माधव जी के पास जो लड़कियाँ जाती हैं वे बालिग होती हैं और अपनी मर्जी से जाती हैं। उनके मोटिव भी अलग-अलग होते हैं। अधिकतर लड़कियाँ मॉडल बन कर सस्ती नामवरी लूटने जाती हैं।

मनीषा : मैं आपकी बात एक मिनट के लिए मान लूँ, तो क्या इससे माधव को मिसबिहेव करने का लाइसेंस मिल जाता है ?

इन्स्पेक्टर : ये सब प्राइवेट बातें हैं। हम दूसरों की जजबाती बातों में कहाँ तक दखल दे सकते हैं !

मनीषा : अच्छा आपने सुषमा का नाम तो सुना होगा ?

इन्स्पेक्टर : सुषमा ! माधव जी की मॉडल ! उसने तो कल आत्महत्या कर ली।

मनीषा : मुझे मालूम है। पर सुषमा सिर्फ एक मॉडल नहीं थी। वह वस्तुतः माधव जी की पत्नी थी ।

इन्स्पेक्टर : आप कहना क्या चाहती हैं ?

मनीषा : मैं कहना चाहती हूँ कि सुषमा ने आत्महत्या नहीं की, उसकी हत्या की गई है।

इन्स्पेक्टर : इस बात का सबूत ?

मनीषा : सुषमा को गर्भ था ।

इन्स्पेक्टर : हाँ, मैंने पोस्ट मार्टम की रिपोर्ट देखी है।

मनीषा : माधव ने अपनी जिम्मेवारी से बचने के लिए सुषमा को आत्म-हत्या के लिए मजबूर किया है।

इन्स्पेक्टर : हो सकता है कि आप सही हों। पर इस बात का कोई सबूत नहीं है ।

मनीषा : आप किस तरह का सबूत चाहते हैं ?

इन्स्पेक्टर : मिस मनीषा, सुषमा अपने पीछे एक खत छोड़ गयी है।

मनीषा : खत ! क्या मैं उसे देख सकती हूँ ?

इन्स्पेक्टर : जी हाँ, जरूर ! लीजिये !

(इन्स्पेक्टर मनीषा को खत देता है)

मनीषा : **(खत पढ़ती है)** —

माधव,

मैं खुदकुशी कर रही हूँ। तुमने मुझे सोचने के लिए एक महीने का वक्त दिया था। देखो न, मैंने एक महीने के पहिले ही फैसला कर लिया।

माधव, मैंने तुम्हें वह सब कुछ दिया जो एक औरत एक मर्द को दे सकती है। लेकिन शायद मैं भीतर ही भीतर एक सौदा कर रही थी। मैं एक साथ तुम्हारी मॉडल, तुम्हारी प्रेयसी और तुम्हारी पत्नी बनना चाहती थी। शायद तुम्हें मजबूर करने के लिए ही मैंने गर्भ धारण किया था। सुनती हूँ

कि शकुन्तला ने भी दुष्यन्त को ऐसे ही बांधना चाहा था।

सच यह है कि मैं बहुत लालची थी। अगर तुमसे इतना अधिक न मांगती तो कहीं न कहीं एडजस्टमेंट हो जाता। तुम मुझे नफरत करना सिखा रहे थे। मैं तुमसे नफरत कैसे कर सकती थी! तुम्हारी पेंटिंग की आदिम लड़की की आँखों में भी नफरत नहीं है। उसकी आंखों में मेरा ही प्यार छलक रहा है।

तुमने एक दिन मेरे हाथ में रिवाल्वर देकर कहा था कि सुषमा, अगर मुझसे कोई शिकायत हो तो मुझे शूट कर दो। लेकिन मैं तुम्हें कैसे शूट कर सकती थी! यह आत्महत्या मैं अपनी मर्जी से, पूरे होश-हवास में कर रही हूँ। इसके लिए तुम किसी तरह जिम्मेवार नहीं हो।

मैंने तुमसे बहुत कुछ पाया है। एक जिन्दगी के लिए इतना ही बहुत है!

तुम्हारी—सुषमा

इन्स्पेक्टर : देखिये मिस मनीषा, सुषमा के इस खत के बाद सारी बात खतम हो जाती है।

मनीषा : शायद आप ठीक कहते हैं। पर मैं जानती हूँ, इस हत्या के लिए माधव नैतिक रूप से जिम्मेवार है।

इन्स्पेक्टर : इसके बारे में हम लोग क्या कर सकते हैं!

मनीषा : क्या आप इसको नहीं मानते कि माधव दो चेहरों वाला आदमी है?

इन्स्पेक्टर : बड़ा बुरा वक्त आ गया है, मिस मनीषा! समाज में दो चेहरे वालों की भीड़ बढ़ती जा रही है। आप जर्नलिस्ट हैं। आप लोगों को इस पर विचार करना चाहिए।

मनीषा : अच्छा इन्स्पेक्टर साहब, थैंक यू वेरी मच! आपका बहुत समय लिया!

इन्स्पेक्टर : ओह नो-नो! इसमें थैंक्स की क्या बात है!

(प्रकाश बुझता है)

(5)

स्थान : विमला बाई का कोठा !

समय : संध्या 4 बजे ।

(कोठे से गाने की आवाज)

विमला : (गाती है)
लाई हयात, आई कजा, ले चली चले,
अपनी खुशी न आये, ना अपनी खुशी चले,

(मनीषा का प्रवेश)

मनीषा : सुनिये !

(गाना थम जाता है)

विमला : आप ! आइये बहन जी ।

मनीषा : मेरा नाम मनीषा है । आपका थोड़ा समय लूंगी । कुछ सवाल पूछना है ।

विमला : पूछिये । बहुत-से लोग आते हैं । कई-कई पन्नों के सवाल पूछते हैं ।

मनीषा : आपको कोई एतराज है ?

विमला : चलिये पूछिये न, कि मैं यह पेशा क्यों करती हूँ ।

मनीषा : विमला जी, लगता है कि आप कुछ नाराज हैं ।

विमला : बहन जी, आपके कितने ही सवाल हमें अपमानित करते हैं । फिर हमारे जवाब न जाने किन फाइलों में खो जाते हैं । कोई हमारे घावों पर पट्टी बांधने क्यों नहीं आता ?

मनीषा : विमला जी, आपने कुछ शिक्षा पाई है ?

विमला : मैट्रिक पास किया था । कॉलेज में जाने से पहले माँ ने मेरी शादी कर दी ।

मनीषा : आपकी शादी हुई थी ?

विमला : मेरी माँ मुझे इस पेशे में डालना नहीं चाहती थी । लेकिन वह शादी सिर्फ एक ख्वाब बनकर रह गयी । लड़के ने एक महीने के अन्दर दूसरी शारी कर, ली और मैं सड़क पर ढकेल दी

गयी।

मनीषा : सुनकर दुख हो रहा है। आपने सचमुच बहुत सफर किया है।

विमला : बहन जी, उस किस्से में अब कुछ नहीं रह गया है। हाँ, आप कुछ सवाल पूछना चाहती थीं ?

मनीषा : जी, सवाल कुछ खास नहीं है। आप माधव जी को जानती हैं ?

विमला : पेंटर बाबू को न ! इधर कई दिनों से नहीं आये ! खैरियत से हैं न ?

मनीषा : जी हाँ, खैरियत से हैं। आप उन्हें कितना जानती हैं ?

विमला : जी, थोड़ा-बहुत जानती हूँ। माधव जी को एक जिन्दगी में नहीं जाना जा सकता।

मनीषा : लोगों का खयाल है कि माधव जी कोई अच्छे आदमी नहीं हैं !

विमला : देखिए बहन जी, जो इस कोठे पर आता है, उस पर एक मुहर लग जाती है। जो नहीं आते उनकी हकीकत भी मैं जानती हूँ। पर माधव बाबू सबसे अलग हैं।

मनीषा : सुनती हूँ कि उन्होंने आपकी पोर्ट्रेट बनायी है ?

विमला : जी हाँ, उन्होंने वह पेंटिंग मुझे दे दी है। वह मेरी जिन्दगी की बेशकीमती दौलत है।

मनीषा : क्या मैं उस पोर्ट्रेट को देख सकती हूँ ?

विमला : जी हाँ; जरूर ! मैंने उस पेंटिंग पर पर्दा डाल दिया है, लेकिन आप देखिये।

(विमला पेंटिंग के पर्दे को हटाती है)

मनीषा : ओ व्हाट ए ब्यूटीफूल पेंटिंग ! विमला जी, आपके पास सच-मुच एक खूबसूरत फिगर है ! और कितनी खूबसूरत आँखें : माई गॉड !

विमला : आपको यह पेंटिंग अच्छी लगी ?

मनीषा : मैं कोई फार्मल बात नहीं कह रही हूँ। इट इज जस्ट सुपर्ब ! पता नहीं माधव जी लड़कियों के चेहरों से इतने खूबसूरत

एक्सप्रेशन कैसे निकाल लेते हैं !

विमला : बहन जी, यह कोई नकली चेहरा नहीं है। आँखों का प्यार ही रंगों में उतर कर आता है !

मनीषा : क्या आप माधव जी से प्रेम करती हैं ?

विमला : पता नहीं, वह प्रेम है या पूजा ! शायद वह पूजा ही है।

मनीषा : आपने सिर्फ प्रेम क्यों नहीं किया ? आपकी पोर्ट्रेट में शुद्ध प्रेम का भाव है।

विमला : प्रेम में बाँधने की इच्छा होती है; लेकिन मैं जानती थी कि माधव जी को बाँधने के लिए मेरे हाथ बहुत छोटे हैं।

मनीषा : आपने कोशिश क्यों नहीं की ?

विमला : नहीं किया। और बहन जी, अब यह तन भी बहुत मैला हो गया है।

मनीषा : आप माधव जी की बहुत बड़ी एडमायरर बन गयी हैं !

विमला : मेरे पास सही शब्द नहीं हैं, बहन जी। पर माधव जी को जब पहली बार देखा तो मैं समझ गयी कि यह आदमी बिलकुल अलग है। जैसे एक चमकीला सितारा टूट कर मेरे आँगन में आ गया हो।

मनीषा : उसने आपके साथ शारीरिक सम्बन्ध किये होंगे ?

विमला : देखिये बहिन जी, इस कोठे पर जो भी आता है शरीर की भूख लेकर आता है। शारीरिक नग्नता का भी हमारे लिए कोई अर्थ नहीं रह गया है। लेकिन माधव जी जब कूची लेकर बैठे और कहा— विमला, मैं तुम्हें पेंट करूँगा कपड़े उतारो, तो मैं एक कुँवारी लड़की की तरह शरमा गयी।

मनीषा : उसके बाद !

विमला : कपड़ा उतार कर मैं बैठ गयी, पर शरम से मेरी आँखें बन्द हो गयीं। तब उसने कहा विमला, आँखें खोलो ! तुम्हारी आँखें बहुत खूबसूरत हैं।

मनीषा : उसने आपका बहुत खूबसूरत पोर्ट्रेट बनाया है।

विमला : मैंने उनसे कहा— माधव जी, यह मेरा पोर्ट्रेट नहीं है। मैं इतनी

खूबसूरत नहीं हूँ। यह पेंटिंग एक झूठ है।

मनीषा : उसने क्या जवाब दिया?

विमला : उसने कहा कि विमला, हरेक आदमी के अन्दर दो आदमी होते हैं। भीतर का आदमी ज्याद खूबसूरत होता है। मैंने तुम्हारे अन्दर जो कुँवारी लड़की है, उसको पेंट किया है।

मनीषा : यह सिर्फ शब्दों का खेल है। तुम्हें मालूम है कि माधव जी की मॉडल सुषमा ने आत्महत्या कर ली है। उस समय माधव जी का फलसफा कहाँ चला गया था!

विमला : मैं पूरी बात नहीं जानती, पर सुषमा माधव जी को मुट्ठी में बांध कर रखना चाहती थी। मैं पूछती हूँ कि बहन जी, कहीं सूरज को मुट्ठी में बांधकर रखा जा सकता है?

मनीषा : आई ऐम सॉरी विमला जी! माधव जी के बारे में आपकी राय से मैं सहमत नहीं हूँ।

विमला : मेरा खयाल है, बहन जी, कि माधव जी से सिर्फ प्रेम किया जा सकता है या पूजा की जा सकती है। आखिर राधा ने भी तो कृष्ण से सिर्फ प्रेम ही किया था!

मनीषा : अच्छा विमला जी, आपका बहुत समय लिया। बाई-द-वे क्या आप इस पेंटिंग को आर्ट गैलरी को प्रेजेंट कर सकती हैं? आप अमर हो जायेंगी।

विमला : नहीं-नहीं, यह बिलकुल असंभव है। मैं अमर होना नहीं चाहती। यह मेरे लिए एक पवित्र यादगार है। बहन जी, कोई अपने घर की मूर्तियों को म्युजियम में नहीं रख देता!

मनीषा : माफ कीजियेगा। मेरा यह मतलब नहीं था। अच्छा अब चलती हूँ।

विमला : कुछ कहा-सुना हो तो माफ कीजियेगा। कभी फुरसत से आइये तो आपको अपना गाना सुनाऊँ।

मनीष : ठीक है, नमस्कार!

विमला : (गाती है)

लाई हयात, आई कजा, ले चली चले,

अपनी खुशी न आये, ना अपनी खुशी चले।

(प्रकाश बुझता है)

(6 क)

स्थान : मेंटल हॉस्पिटल।

समय : सुबह 10 बजे।

(पृष्ठभूमि में पागलों के ठहाके)

डाक्टर : आप मिस सीमा से मिलना चाहती हैं ?

मनीषा : जी हाँ ! मिस सीमा, जो पहले एक मशहूर डांसर थी।

डाक्टर : मिस सीमा से मिलने का कोई अर्थ नहीं रह गया है। वह पागलपन की तीसरी स्टेज में पहुँच गयी है।

मनीषा : एक मशहूर डांसर के लिए कितनी बड़ी ट्रैजेडी है ! आपको इन्टरव्यू में कोई एतराज है ?

डाक्टर : नहीं, चलिये।

(चलने की आवाज)

(पागलों के ठहाके ज्यादा तेज सुनाई पड़ते हैं)

एक आवाज : दो के दो, दो दुनी चार, चार दुनी आठ, आठ दुनी सोलेह। दो के दो, दो दुनी चार !

दूसरी आवाज : (मनीषा से) देखिये मैडम, हरेक आदमी एक शलजम होता है। एक आदमी एक शलजम के सिवा कुछ नहीं होता। जी हाँ, आप भी एक शलजम हैं। **(हा-हा-ही-ही)**

तीसरी आवाज : (गाना) पानी भरे हो कौन अलबेले की नार झमाझम ! एहो पानी भरे रे कौन अलबेले की नार झमाझम !

डाक्टर : देखिये वह सामने मिस सीमा है ! हम लोगों ने इन्हें सिंगिल सेल में रख दिया है।

मनीषा : माई गॉड ! यही मिस सीमा हैं ! मैंने एक बार इनका डांस देखा था। उस समय क्या ग्लैमर था !

सीमा : देखिये डाक्टर साहब, तबले वाला फिर एक मात्रा चूक गया।

(एक परन का तोड़ा पढ़ती है)

वृन्दावन की कुंजगलिन में, ताता थैया; नाचत कन्हैया, ठुमक-ठुमक पग धरति धरनि तक धा, धरनि तक धा, धरनि तक धा।

फिर वही गलती! डाक्टर साहब, मेरे साथ यही ट्रैजेडी है। मुझे ठीक संगत नहीं मिलती। कभी मैं एक मात्रा चूक जाती हूं, कभी वह।

डाक्टर : कहो सीमा, कैसी हो?

सीमा : डाक्टर साहब, यह लड़की कौन है? यह तो वही डांसर है। इसी ने मुझे बरबाद किया है।

मनीषा : माधव को जानती हो?

सीमा : माधव! वह अच्छा आदमी था। पर सभी अच्छे आदमी फ्रॉड होते हैं। मुझे सब छोड़कर चले गये! सब छोड़कर चले गये!

डाक्टर : सीमा, कुछ चाहिए?

सीमा : डाक्टर साहब, मेरा घुंघरू खो गया है। एक सेट घुंघरू चाहिए। और माधव को बुला दीजिये। वह मेरे पैरों में घुंघरू बांधता था।

डाक्टर : चलिये मिस मनीषा!

मनीषा : चलिये!

एक आवाज : मेरी बीवी ने शलजम भून कर भुरता बना दिया। मैं अपनी बीवी से बदला लूंगा। जरूर बदला लूंगा।

(चलने की आवाज। पागलों के ठहाके)

मनीषा : डाक्टर साहब, मैं सीमा की हिस्टरी देखना चाहती हूं। इतनी बड़ी डांसर इस तरह बरबाद हो गयी। मेरे खयाल में इसके लिए माधव जिम्मेवार है।

डाक्टर : आप माधव जी को जानती हैं?

मनीषा : थोड़ा-बहुत।

डाक्टर : मामला इतना आसान नहीं है। अनेक तार आपस में उलझ

गये हैं।

(प्रकाश बुझता है)

(6 ख)

(पृष्ठभूमि में तबले की आवाज)

सीमा : जो भी हो, माधव, यू आर ए ग्रेट आर्टिस्ट।

माधव : क्यों क्या हुआ ?

सीमा : तुमने मेरी नृत्य मुद्राओं के जो पोस्टर्स बनाये थे, बेहद खूबसूरत थे। तुम्हारे स्टेज सेट्स भी सुपर्ब थे ! कुँवर साहब बड़ी तारीफ कर रहे थे।

माधव : कुँवर साहब पिछले शो में आये थे ?

सीमा : ओ सॉरी, मैं तुमको इन्ट्रोड्यूस कराना भूल गयी। जो भी हो वे तुम्हारे बारे में काफी जान गये हैं।

माधव : सीमा, आज तुम्हारा डांस बहुत अच्छा था।

सीमा : ओ थैंक्स् ! देखो माधव, डांस एक सामूहिक कला होती है। अगर तुम इसी तरह सहयोग देते रहे तो दुनिया की सभी नियामतें हमारी मुट्ठी में आ जायेंगी।

माधव : सीमा, मैं तुमसे एक बात कहना चाहता था।

सीमा : मैं जानती हूँ। मैंने कुँवर साहब से कहा है। तुम्हें अकादमी से कुछ आर्डर मिल जायेंगे।

माधव : मैं आर्डर की बात नहीं कह रहा था।

सीमा : ओ येस, मुझे याद आया। पहली तारीख को आर्ट गैलरी में तुम्हारे चित्र प्रदर्शित हो जायेंगे। कुँवर साहब ने अरेंज कर दिया है।

माधव : नहीं सीमा, मैं कुछ आपसी बातें करना चाहता था।

सीमा : माई डीयर माधव, मैं बहुत थक गयी हूँ। तुम्हारी जज़बाती बातों को फिर सुन लूंगी। लो उठाओ गिलास। आज की सफलता पर एक-एक पेग हो जाय।

(सीमा शराब ढालती है)

सीमा : माई डीयर ब्वाय, लाइफ एक कड़वी सचाई है। उसमें भावुक बनने से काम नहीं चलता।

माधव : सीमा, पता नहीं तुम मेरी भावनाओं को कब समझोगी !

सीमा : माई डीयर ब्वाय, तुम अभी बचकानी उमर से गुजर रहे हो। लेकिन खूबसूरत ख्वाबों को कभी सच नहीं मानना चाहिए।

(गिलास टेबुल पर रखती है)

माधव : सीमा, काफी देर हो गयी है। चलो तुम्हें होटल में छोड़ आऊँ।

सीमा : थैंक यू माधव ! लेकिन बाहर कुंवर साहब की कार खड़ी है। आज वहाँ काकटेल और डिनर है।

माधव : सीमा, तुम झूठमूठ होटल का भाड़ा दे रही हो। कुँवर साहब के यहाँ ही क्यों नहीं शिफ्ट कर जाती !

सीमा : नानसेंस, मैं अपना अच्छा-बुरा समझती हूँ। और याद रखो, मुझे तुम्हारी राय की कोई जरूरत नहीं है।

(प्रकाश बुझता है)

(6 ग)

सीमा : अरे माधव, मैं तुम्हारे लिए बहुत अच्छी खबर लायी हूँ।

माधव : क्यों क्या हुआ ?

सीमा : आर्ट गैलरी में तुम्हारे चित्रों की बड़ी अच्छी प्रतिक्रिया हुई है।

माधव : थैंक यू वेरी मच।

सीमा : इसी तरह मेहनत करते जाओ। अगर कुँवर साहब चाहेंगे तो तुम जम जाओगे।

माधव : सीमा, मैं तुमसे कुछ साफ-साफ बात करना चाहता हूँ।

सीमा : मैं भी पैर तले दूब नहीं जमने देना चाहती। तुम यही कहोगे न कि तुम मुझे प्राणों से ज्यादा प्यार करते हो !

माधव : सीमा, मेरे प्यार का इस तरह मजाक मत उड़ाओ।

सीमा : तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी हरेक बात सीरियसली लूं !

माधव : सीमा, तुम्हें एक रास्ता चुनना पड़ेगा, मैं या कुँवर साहब।

सीमा : शट अप ! बहुत हो गया।

माधव : सीमा, तुम जिस डाल पर बैठी हो, किसी समय धोखा दे सकती है।

सीमा : तुम्हें कुँवर साहब के बारे में यह सब कहते शर्म नहीं आती ! कुँवर साहब ने तुम्हें आर्डर दिलवाये। उनके बिना तुम आर्ट गैलरी में कभी नहीं पहुँच सकते थे।

माधव : सीमा, मैं नहीं चाहता कि हमारे-तुम्हारे प्राइवेट मामलों में कुँवर साहब का दखल हो।

सीमा : हमारे-तुम्हारे प्राइवेट मामले—व्हाट नानसेंस ! मैंने तुमको थोड़ा लिफ्ट दिया, बस तुम ख्वाब में डूब गये !

माधव : सीमा, मैं तुम्हें सच्चे दिल से प्यार करता हूँ।

सीमा : कई बार सुन चुकी हूँ। पर तुम अपनी हकीकत नहीं समझते। तुम्हारे जैसे नवसुखए पेंटर के साथ मेरा क्या फ्यूचर है !

माधव : क्या तुम्हारा यही फैसला है ?

सीमा : देखो माधव, हम लोग अपनी-अपनी जगह रहें तभी एडजस्ट-मेंट हो सकता है।

माधव : अपनी-अपनी जगह का क्या मतलब है ?

सीमा : बस, मुझे जो कुछ कहना था कह दिया। अब मुझे देर हो रही है। आज सेठ कांतिलाल के यहाँ पार्टी है। अगर सेठ जी खुश हो गये तो पेरिस फेस्टिवल में मेरा चांस तय है।

माधव : जाओ सीमा, विश यू द बेस्ट आफ लक !

(प्रकाश बुझता है)

(6 घ)

माधव : तुम सीमा, इतनी रात का ! कुँवर साहब कहाँ हैं ?

सीमा : माधव, मैं बिलकुल बरबाद हो गयी।

माधव : क्यों क्या हुआ ?

सीमा : कुँवर साहब एक दूसरी डांसर के साथ पेरिस फेस्टिवल चले गये। कहते हैं कि वह दूसरी लड़की मुझसे ज्यादा खूबसूरत और यंग थी।

माधव : कुँवर साहब तो तुम्हारे आर्ट के बहुत बड़े प्रशंसक थे।

सीमा : वह सब झूठ बातें थीं। कुँवर साहब ने सिर्फ मेरा शोषण किया।

माधव : सेठ कांतिलाल कहाँ गये ? उस रात तुम सेठ को खुश करने गयी थीं।

सीमा : क्या कहूँ ! सब कुँवर साहब की बदमाशी थी। सेठ जी के सामने मैं चारे की तरह डाली गयी लेकिन चांस दूसरी लड़की को मिला।

माधव : तुम्हारी पार्टी के दूसरे लोग कहाँ हैं ?

सीमा : कुँवर साहब ने सबको फुसला लिया। माधव, मैं बिलकुल बरबाद हो गयी।

माधव : मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ ?

सीमा : मुझसे लव करो माधव ! मुझे तुम्हारे लव की जरूरत है।

माधव : मैं बहुत मामूली आदमी हूँ। मैं तुम्हारे बिलकुल लायक नहीं हूँ।

सीमा : नहीं, मुझे मालूम है। तुम एक उठते हुए सितारे हो। कुँवर साहब ने कम-से-कम एक बात सच कही थी।

माधव : नहीं, मैं तुमको प्यार नहीं कर सकता। यह बिलकुल असंभव है।

सीमा : माधव, तुम एक दिन मुझे बहुत लव करते थे।

माधव : उस बात को भूल जाओ। मैंने उस घटना का प्रायश्चित्त कर लिया है। तुम भी उसे एक डरावना ख्वाब जान कर भूल जाओ।

सीमा : माधव, मेरे पास अब भी पैसे हैं। मैं तुम्हें अच्छी तरह बिल्ड अप कर सकती हूँ।

माधव : शट अप ! तुम सोचती हो कि तुम मुझे खरीद सकती हो ?

सीमा : माधव, मेरी तरफ देखो ! मैं अब भी खूबसूरत और यंग हूँ।

माधव : खूबसूरत और यंग ! तो जाओ किसी कोठे पर बैठ जाओ।

सीमा : माधव, तुम नाराज हो ! क्या तुम समझते हो कि मैं एक बदचलन औरत हूँ ?

माधव : सीमा, मुझे सब कुछ कहने के लिए मजबूर मत करो।

सीमा : माधव, मुझे एक मौका दो ! मैं तुम्हें तन-मन से प्यार करूँगी।

माधव : प्यार का नाम मत लो। नफरत का नाम लो। मैं तुमसे सख्त नफरत करता हूँ।

सीमा : माधव, मैं पूरे सामान के साथ आई हूँ। मुझे इस तरह मत ठुकराओ।

माधव : आई से गेट आऊट ! अगर तुम नहीं जाओगी तो मैं तुम्हारा सामान सड़क पर फेंक दूँगा।

सीमा : माधव, रात काफी ढल चुकी है। इस समय मैं कहाँ जा सकती हूँ?

माधव : किसी होटल में जगह मिल जायेगी ! या किसी अड्डे पर जाकर खड़ी हो जाओ। लोगों को मालूम हो जायगा कि सीमा दी फेमस डांसर पचास रुपये पर अवेलेबुल है।

सीमा : माधव, बहुत हो गया !

माधव : आई से गेट आऊट। मैं तुमसे नफरत करता हूँ।

(प्रकाश बुझता है)

(6 ङ)

डाक्टर : उसके बाद सीमा एक-एक सीढ़ी गिरती गयी। अंत में इस अस्पताल में दाखिल हुई। बहुत कोशिश के बाद भी हालत में कोई सुधार नहीं है।

मनीषा : थैंक यू डाक्टर। आपका बहुत समय लिया। बहुत-सी बातें हैं। इन पर विचार की जरूरत है।

(प्रकाश बुझता है)

(7)

स्थान : 'कला संगम' का दफ्तर ।

समय : सुबह 10 बजे ।

संपादक : हलो मनीषा !

मनीषा : सर, मैंने माधव के बारे में सारा मैटर इकट्ठा कर लिया ।

संपादक : इन इन्टरव्यूज का क्या निचोड़ निकला ?

मनीषा : सर, माधव तीन टुकड़ों में बँटा हुआ इंसान है और इन टुकड़ों में कोई ताल-मेल नहीं है ।

संपादक : माधव से मिली थी ?

मनीषा : नहीं सर, मेरे खयाल में अब इसकी कोई जरूरत नहीं है ।

संपादक : व्हाट नानसेंस ! जाओ माधव से मिलो । हमारा अगला अंक अब लगभग तैयार है ।

मनीषा : सर, अगर वह मिलने से इंकार कर दे ?

संपादक : तो फिर ट्राई करो । उतनी बार नॉक करो जब तक दरवाजा न खुल जाय ।

मनीषा : सर, मुझे कितना टाइम दे रहे हैं ?

संपादक : अधिक से अधिक एक हफ्ता ।

मनीषा : ठीक है सर कोशिश करती हूँ ।

संपादक : और सुनो, आर्ट कौंसिल ने 'आदिम अग्नि' पर अजन्ता पुरस्कार घोषित कर दिया है । यह आर्ट की दुनिया का सबसे बड़ा पुरस्कार है ।

मनीषा : माई गॉड, तब तो माधव का दिमाग बिलकुल सातवें आसमान पर पहुँच गया होगा ।

संपादक : डोंट वरी गर्ल । गो ऐंड ब्रिंग ए गुड कवरेज !

(प्रकाश बुझता है)

(8)

स्थान : लाधव का स्टुडियो ।

समय : संध्या 6 बजे ।

(माधव एक चित्र बनाने में व्यस्त है)

मनीषा : क्षमा करेंगे । मैं आपका थोड़ा समय लूंगी ।

माधव : तुम स्टुडियो में सीधे क्यों चली आयीं ? बाहर नॉक क्यों नहीं किया ?

मनीषा : आपकी कॉल बेल बिगड़ गयी है । नॉक करने पर किसी ने जवाब नहीं दिया ।

माधव : ओ येस, रतना बुखार में पड़ी है । खैर तुम क्या चाहती हो ?

मनीषा : मैं मनीषा हूँ । 'कला संगम' में आर्ट कॉलम लिखती हूँ ।

माधव : अच्छा तो तुम्हीं 'कला संगम' की आर्ट क्रिटिक हो । तुम्हीं ने आर्ट गैलरी में मेरे चित्रों की समीक्षा की थी । तुम्हीं ने तो लिखा था कि माधव के चित्रों में आदिम कला का विस्फोट है ।

मनीषा : इसमें बुरा मानने की क्या बात है ?

माधव : तुम यही कहना चाहती हो कि मेरी कला बचकानी है, प्रिमिटिव है ।

मनीषा : नहीं, इसका यह अर्थ नहीं है । आदिम कला ईमानदार होती है । उस पर झूठा मुलम्मा नहीं होता ।

माधव : तुम क्या लिखती हो और क्या नहीं लिखतीं, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है । आई केयर ये फिग फॉर क्रिटिक्स लाइक यू ।

मनीषा : मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहती हूँ । आपने अपनी प्राइज पेंटिंग का नाम रखा है—'आदिम अग्नि' । इसका क्या अर्थ है ?

माधव : मैं आदमी का सच्चा चेहरा दिखाना चाहता हूँ । अपने सभी मुलम्मे के बावजूद आदमी बर्बर है ।

मनीषा : अगर यही बात है तो आप आदिम कला के नाम पर इतना

क्यों भड़कते हैं ? क्या आप जानते हैं कि लोग फिर स्टोन मैन की ड्राइंग की नकल कर रहे हैं ?

माधव : तुम मुझसे चित्रकला पर बहस करने आई हो ?

मनीषा : नहीं, बिलकुल नहीं। मैं आपको बधाई देने आई हूँ। आर्ट कौंसिल ने 'आदिम अग्नि' पर अजन्ता एवार्ड दिया है।

माधव : तुम बहुत देर से आई हो ! तुम्हें शायद मालूम नहीं है, मैंने इस एवार्ड को अस्वीकार कर दिया है।

मनीषा : आप जानते हैं आर्ट की दुनिया का यह सबसे बड़ा एवार्ड है।

माधव : मुझे सिखाने की जरूरत नहीं है। मैंने अपना निर्णय लिखकर भेज दिया है।

मनीषा : इस निर्णय की कोई-न-कोई वजह होगी ?

माधव : इस एवार्ड को स्वीकार करने के लिए भी तो वजह होनी चाहिए।

मनीषा : यह एक सामाजिक सम्मान है। आर्ट कौंसिल ने एक राय से यह फैसला किया है।

माधव : मैं तुम्हारी आर्ट कौंसिल को जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि ये फैसले कैसे किये जाते हैं।

मनीषा : लगता है कि आप बहुत नाराज हैं।

माधव : सुनो मिस, मेरी पेंटिंग तीन बार आर्ट गैलरी से लौटा दी गयी। 'आदिम अग्नि' को भी किसी ने नोटिस नहीं किया। मुझे कहते शर्म आती है कि अगर सीमा ने पैरवी न की होती तो 'आदिम अग्नि' मेरे स्टुडियो में धरी रह जाती। आज सब तालियाँ बजा रहे हैं। मुझे नहीं चाहिए, ये तालियाँ !

मनीषा : एक नये कलाकार को संघर्ष करना ही पड़ता है।

माधव : तुम किन लोगों की बात करती हो ! जिनको आर्ट का ए-बी-सी नहीं आता, आर्ट कौंसिल में कला के भाग्य-विधाता बने बैठे हैं।

मनीषा : आखिर आज तो सब आपके मेरिट को मान्यता दे रहे हैं।

माधव : यह भी झूठ है। किसी ने मान्यता नहीं दी है। सब मुझे

खरीदना चाहते हैं।

मनीषा : माधव जी, आपके मन में अनेक कुंठाएं जम गयी हैं।

माधव : मुझे लेक्चर मत दो ! तुम क्यों मेरे स्टुडियो में चली आईं ? तुमने देखा नहीं कि मेरे स्टुडियो पर नो एडमिशन का बोर्ड लगा है !

मनीषा : सॉरी, मैं आपको हर्ट करना नहीं चाहती थी !

माधव : सुनो, मुझे सोफ्ट वर्ड्स नहीं आते। मुझे सोफ्ट वर्ड्स की जरूरत नहीं है। मैं नफरत से एक दिन सबको झुका दूंगा।

मनीषा : अच्छा जा रही हूँ। नमस्कार !

माधव : देखो दूसरी बार बिना एप्वाइंटमेंट के मत आना। तुमने बेकार मेरा बहुत वक्त बरबाद किया।

(प्रकाश बुझता है)

(9)

स्थान : माधव का बेडरूम।

समय : दूसरे दिन।

मनीषा : क्या बात है ? इस तरह क्यों पड़े हुए हो ?

माधव : तु···म···फि···र···आ···गईं ! अप्वाइंटमेंट क्यों नहीं लिया?

मनीषा : कौन देता ? तुम्हारा अप्वाइंटमेंट तो तुम्हीं से लिया जा सकता है।

माधव : हाँ, रतना बीमार है। इधर मेरी तबीयत भी ठीक नहीं है।

मनीषा : तुमको क्या हुआ है ? (छूकर) माई गॉड ! तुमको तो बुखार है !

माधव : बुखार तो खास नहीं है। हाँ सिर बहुत दुख रहा है।

मनीषा : किसी को बुला क्यों नहीं लिया ?

माधव : कौन आयेगा ? मिस मनीषा, मैं बिलकुल अकेला हूँ।

मनीषा : सुनो, मैं तुमसे छोटी हूँ। तुम मुझे मनीषा ही कहो !

माधव : एक सवाल पूछूं ? तुम मुझे क्यों परेशान कर रही हो ? तुम

मुझसे क्या चाहती हो ?

मनीषा : माधव, तुम्हें मेरी मदद की जरूरत है। मैं तुमको हेल्प करना चाहती हूँ। लाओ सिर में दवा मल देती हूँ।

(मनीषा माधव के सिर में दवा लगाती है)

माधव : मेरे पास जो भी आया, एक मकसद लेकर आया। क्या तुम मेरा मॉडल बनना चाहती हो ?

मनीषा : माधव, मैं एक बहुत मामूली लड़की हूँ। मेरे पास न फिगर है न खूबसूरती। मैं मॉडल बनने का ख्वाब भी नहीं देख सकती।

माधव : बुरा मत मानना, क्या तुम मुझसे प्रेम करना चाहती हो ?

मनीषा : माधव, मैं एक वर्किंग गर्ल हूँ। मेरी कमाई से घर का खर्च चलता है। मेरे लिए प्रेम एक बहुत बड़ी लग्जरी है।

माधव : तब तुम क्या चाहती हो ?

मनीषा : माधव, तुम्हारे मन में इतना अविश्वास क्यों है ? क्या एक लड़की और लड़के के बीच सिर्फ सहानुभूति और साहचर्य नहीं हो सकता ?

माधव : शायद हो सकता है, पर मैंने कहीं नहीं देखा।

मनीषा : माधव, तुमने कितनी दुनिया देखी है ?

माधव : बहुत कम। लेकिन जितना चखा है, स्वाद बहुत कड़ुवा रहा है।

मनीषा : माधव, जब तुम दुःख में होते हो तो किसको याद करते हो ?

माधव : किसी को नहीं। सुनता हूँ कि लोग दुःख में ईश्वर को याद करते हैं, लेकिन मैं ईश्वर को नहीं मानता।

मनीषा : माधव, तुम्हें कभी अपनी माँ याद नहीं आती ?

माधव : मनीषा, मैंने अपने माँ-बाप, भाई-बहन, किसी का चेहरा नहीं देखा। सुनता हूँ कि मेरी माँ मुझे जन्म देने के बाद ही अस्पताल में फेंक कर चली गयी थी।

मनीषा : माई गॉड ! व्हाट ए ट्रेजेडी ! माधव, तुमने सचमुच बहुत सफर किया है।

माधव : सुनो, अब इस बातचीत को बंद करो ! मुझे तुम्हारी सहानु-

भूति नहीं चाहिए ! मुझे कमजोर मत करो !

मनीषा : नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था। बस एक सवाल और। सुषमा तुमको इतना लव करती थी। क्या उसने तुम्हारी वजह से आत्महत्या नहीं की ?

माधव : क्या तुम भी यही सोचती हो ! सुषमा आत्मकेंद्रित थी। सिर्फ अपने बारे में सोचती थी। उसने कभी यह सोचने की कोशिश नहीं की कि आखिर मैं क्या चाहता हूँ।

मनीषा : सीमा ने तुमको इतना पुश किया। मैंने मान लिया कि उसने अपने कैरियर के लिए अपनी अस्मत का सौदा किया। पर वह तुमको प्यार करती थी। तुम इस बात से कैसे इंकार कर सकते हो ?

माधव : नहीं मनीषा, सीमा मुझे नहीं, सिर्फ अपने कैरियर से प्यार करती थी।

मनीषा : मेरे खयाल में तुम्हें सीमा को एक चांस और देना चाहिए था।

माधव : इन बातों की बुनियाद ही गलत है। सीमा ने मुझे कभी प्यार नहीं किया।

मनीषा : माधव, तुम विमला के पास भी गये थे ?

माधव : हाँ, गया था। विमला एक सही लड़की थी। मैंने उसकी एक पेंटिंग भी बनाई थी।

मनीषा : क्या विमला तुमको प्यार करती थी ?

माधव : शायद करती हो ! मैंने कभी जानने की कोशिश नहीं की।

मनीषा : तुम झूठ बोलते हो। तुम जानते हो कि विमला तुमसे प्यार करती है। तुम्हीं ने उससे कहा था कि—(**माधव की अवाज में**) विमला, हर आदमी के अन्दर दो आदमी होते हैं। भीतर का आदमी ज्यादा खूबसूरत होता है। मैंने तुम्हारे अंदर जो कुंवारी लड़की है, उसको पेंट किया है।

मनीषा : मैं पूछती हूँ कि क्या ये कोरे शब्द थे ?

माधव : तुम कहना क्या चाहती हो ?

मनीषा : मैं कुछ कहना नहीं चाहती। तुम्हीं से पूछना चाहती हूँ। तुम

जानते थे कि विमला तुमको प्यार करती है। तुमने उसका हाथ क्यों नहीं पकड़ लिया ?

माधव : मनीषा, विमला कई साल कोठे पर बैठ चुकी थी।

मनीषा : अगर यही सच था तो तुम विमला के अन्दर किस कुंवारी लड़की को ढूंढ़ रहे थे ?

माधव : मनीषा, मैं तुम्हें नहीं समझ पा रहा हूँ।

मनीषा : तुम सब कुछ जानते हुए भी विमला का हाथ नहीं पकड़ सके, क्योंकि तुम समाज से डरते हो। तुम्हारे अन्दर हिम्मत नहीं थी। तुम एक हिपोक्रेट हो !

माधव : नहीं, यह सच नहीं है।

मनीषा : मैं कहती हूँ कि यह सच है। सुनो माधव, तुम दूसरों का नकाब चीरते फिरते हो ! पहले अपना नकाब उठाओ ! नफरत की लाठी भांजकर मसीहा बनने की कोशिश मत करो।

(प्रकाश बुझता है)

(10)

स्थान : मनीषा का फ्लैट।

समय : सुबह 10 बजे।

(टेलीफोन की घंटी बजती है)

संपादक : मनीषा, मैं कला संगम का संपादक बोल रहा हूँ।

मनीषा : क्या बात है, सर !

संपादक : भई, माधव के इन्टरव्यू का क्या हुआ ?

मनीषा : सर, तैयार कर रही हूँ।

संपादक : भई, तुम्हारी वजह से मैगजीन लेट हो रही है ! क्या हुआ ? माधव से भेंट हुई ?

मनीषा : हाँ सर, हुई है।

संपादक : फिर क्या देरदार है ?

मनीषा : सर, मुझे एक दिन का और समय दीजिये।

संपादक : इस बार तुमने परेशान कर दिया। एक छोटा-सा एसाइनमेंट भी तुम समय पर पूरा नहीं कर सकी।

मनीषा : सर, यह छोटा एसाइनमेंट नहीं है।

संपादक : सुनता हूँ कि उसने आर्ट कौंसिल का एवार्ड लौटा दिया! अजब पागल आदमी है!

मनीषा : हाँ सर, यह खबर सही है।

संपादक : वेल, तुम्हारी स्क्रिप्ट के लिए कब तक इन्तजार करूँ?

मनीषा : कल तक, पाजिटिवली!

(प्रकाश बुझता है)

(11)

स्थान : माधव का स्टुडियो।

समय : सुबह 10 बजे।

माधव : आओ मनीषा, आज मैं सुबह से ही तुम्हारा इन्तजार कर रहा था।

मनीषा : क्यों क्या बात है ? सूरज आज पश्चिम में कैसे उग गया ?

माधव : आज तय किया है कि तुम्हें पेंट करूँगा।

मनीषा : माधव, मैं वर्किंग गर्ल हूँ। इतना टाइम नहीं दे सकती।

माधव : कोई बात नहीं, दो-तीन सिटिंग में पेंटिंग पूरी कर लूँगा।

मनीषा : माधव, सबसे बड़ी बात यह है कि मैं कपड़े नहीं उतारूँगी।

माधव : लेकिन मनीषा, मैं तो न्यूड्स ही पेंट करता हूँ। उसमें आदमी की असली पर्सनैलिटी उभरती है।

मनीषा : माधव, तुम दूसरा मॉडल ले लो। मैंने तो पहले ही कहा था कि मैं तुम्हारा मॉडल बनना नहीं चाहती!

माधव : ठीक है कपड़े के साथ ही बैठो। तुम्हारे अन्दर कुछ है। मैं उसे रंगों में पकड़ना चाहता हूँ।

मनीषा : माधव, मैं फिर रिफ्यूज कर रही हूँ। तुम झूठमूठ मेरे चेहरे पर नफरत की राख फैला दोगे।

माधव : ऐसा क्यों सोचती हो ?

मनीषा : क्योंकि तुम्हारे अन्दर नफरत की आग है। मैं तुम्हारी 'आदिम अग्नि' को भी नफरत का महाकाव्य मानती हूँ।

माधव : मनीषा, लगता है कि तुम आदमी की नफरत नहीं देख पायी हो। जानबर में नफरत करने की क्षमता नहीं होती। सिर्फ आदमी नफरत कर सकता है।

मनीषा : मैंने आदमी की नफरत के साथ-साथ आदमी के प्यार को देखा है।

माधव : वह प्यार नहीं, प्यार का नाटक होता है।

मनीषा : माधव, एक कुत्ता दूसरे कुत्ते को बरदाश्त नहीं कर सकता। एक शेर दूसरे शेर के साथ नहीं रह सकता। इसलिए न कुत्ते ने कोई संस्कृति बनाई, न शेर ने।

माधव : तुम कहना क्या चाहती हो ?

मनीषा : आदमी प्यार करना जानता है। आदमी प्यार कर सकता है। इसीलिए उसने ताजमहल बनाया। जानते हो जंगल में हजारों कलाकार सैकड़ों साल तक अजंता और एलोरा की गुफाओं में प्यार का रंग भरते रहे।

माधव : तुम आदिम अग्नि के बारे में कुछ कह रही थीं।

मनीषा : माधव, मनुष्य के अन्दर की आग 'नफरत की आग' नहीं है। वह एक सृजन की ऊर्जा है। उसे किसी भी सांचे में ढाला जा सकता है। इन सारी संस्कृतियों-सभ्यताओं ने उसी 'आदिम अग्नि' से जन्म लिया है।

माधव : मनीषा, तुम्हें देख कर कभी-कभी लगता है कि प्यार भी कुछ है।

मनीषा : माधव, तुम एक बहादुर आदमी हो। अकेले दुनिया से लड़े और अब सफलता के दरवाजे पर खड़े हो। लेकिन इतना नफरत ढोने की क्या जरूरत है ?

माधव : मनीषा, मैं सचमुच अकेला हूँ। तुम जानतीं नहीं कि मैंने इस अकेलेपन में कितना सफर किया है।

मनीषा : माधव, मैं तुम्हारी पीड़ा समझती हूँ। मुझे तुम्हारे साथ सच्ची सहानुभूति है।

माधव : मनीषा, सिर्फ सहानुभूति काफी नहीं है। क्या तुम मुझसे प्रेम कर सकती हो ?

मनीषा : माधव, मैं एक बहुत मामूली लड़की हूँ। मेरे पास न रूप है, न धन। सिर्फ भावनाओं में पड़कर तुम एक बिलकुल गलत लड़की को प्रपोज कर रहे हो !

माधव : मनीषा, रूप और धन की हकीकत मैं अच्छी तरह जानता हूँ। तुम हां कह दो, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

मनीषा : माधव, सोच लो। अभी सोचने के लिए बहुत वक्त है।

माधव : मनीषा, विमला मुझे प्यार करती थी, पर मैं उस प्यार को पहचान नहीं सका। मैं तुम्हारे प्यार को पहचान गया हूँ। अब मैं दुबारा गलती नहीं करूंगा।

मनीषा : माधव, इतने बड़े निर्णय को इतनी जल्दी नहीं करना चाहिए।

माधव : मनीषा, हम किसी मॉडल को पेंट करते हैं तो बहते हुए क्षणों में एक क्षण को पकड़ लेते हैं और उसे अमर बना देते हैं। हमारे-तुम्हारे सम्बन्धों में भी ऐसा खूबसूरत क्षण आया है। यह क्षण हमारे लिए एक अमर क्षण बन सकता है।

मनीषा : माधव !

माधव : मेरा हाथ थाम लो, मनीषा ! मैं बहुत अकेला हूँ। मुझे तुम्हारी जरूरत है।

मनीषा : ठीक है, माधव ! मुझ पर विश्वास करो। मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दूंगी।

माधव : मनीषा, मुझे तुम पर विश्वास है। पहले अपने पर ही विश्वास नहीं था। पर मुझे अब सब कुछ बदला-बदला लग रहा है।

(प्रकाश बुझता है)

(12)

स्थान : 'कला संगम' का दफ्तर।
समय : दूसरे दिन 10 बजे।

संपादक : अरे मनीषा, आओ भाई, मैं तुम्हारा वहुत बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

मनीषा : देखिए मैंने आज के लिए वादा किया था। ठीक समय पर हाजिर हूँ।

संपादक : क्या हुआ ? माधब जी पर अपना आलेख ले आई ?

मनीषा : ओ येस, यह लीजिये माधव जी पर आलेख और ये हैं आपके माधव जी !

संपादक : माधव जी ! आप यहाँ ! माई गॉड ! मनीषा—तुमने अभी तक परिचय क्यों नहीं कराया ! पागल लड़की, हमको सस्पेंस में रखना चाहती थी।

माधव : आपकी मैगजीन को बराबर देखता रहा हूँ। आप सचमुच कला की सेवा कर रहे हैं।

संपादक : अरे मैं क्या हूँ ! आप यहाँ आये, हमारा सौभाग्य ! समझ में नहीं आता कि आपकी क्या खातिर करूँ। अरे, मनीषा, कम से कम चाय तो मँगवाओ।

माधव : नहीं-नहीं, किसी फ़ार्मेल्टी की जरूरत नहीं है।

संपादक : सुनता हूँ कि आपने आर्ट कौंसिल के एवार्ड को अस्वीकार कर दिया। भई, आप कलाकार हैं कुछ न कुछ तो सोचा ही होगा।

मनीषा : उस बात को छोड़िये, सर ! जरा सोचिये न ये एवार्ड कैसे-कैसे लोगों को दिये जाते हैं !

संपादक: हाँ ठीक ही है। लेकिन माधव जी, हम लोग इस बार आपकी कला पर एक स्पेशल नम्बर निकाल रहे हैं। आपकी लाइफ और आर्ट पर खुद मनीषा ने लिखा है।

माधव : इस अंक में एक खबर छाप दीजिए कि मैं और मनीषा अपने

एंगेजमेंट को एनाउंस कर रहे हैं।

संपादक : ओ माई गॉड ! व्हाट ए न्यूज ! बधाई माधव जी ! बेबी तुमको भी हार्टी कांग्रेचुलेशंस ! अरे चपरासी कहाँ गया ? भई, माधव जी और मनीषा का मुँह मीठा कराओ, ब्वाय ! ब्वाय ! ब्वाय !

(प्रकाश बुझता है)

पटाक्षेप

मुजाहिद

(कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर एक सामाजिक नाटक)

पात्र-परिचय

1.	शेख हसन (पिता)	55 वर्ष
2.	अब्दुल (पुत्र)	25 ,,
3.	रजिया (पुत्री)	20 ,,
4.	कैप्टेन अनवर (मुजाहिदों का अफसर	28 ,,
5.	श्यामलाल (पत्रकार)	26 ,,
6.	इंस्पेक्टर पूरनसिंह	40 ,,

दो भारतीय सैनिक और
तीन पाकिस्तानी सैनिक।

पहला दृश्य

स्थान : गुलमर्ग (कश्मीर)
समय : रात्रि का दूसरा पहर

दृश्यबंध : मंच पर अंधकार। पीछे पर्वतों की एक पांत। पेड़ों का झुरमुट। बायीं ओर एक झोंपड़ी।

पहाड़ों के बीच पगडंडी से एक नकाबपोश सैनिक उतरता है। वह इधर-उधर देखता हुआ नेपथ्य में चला जाता है।

कुछ क्षणों के बाद दूसरा नकाबपोश सैनिक पहाड़ी से उतरता हैं। वह दायें-बायें देखता हुआ दौड़कर नेपथ्य में प्रवेश कर जाता है।

इस क्रम में तीसरा नकाबपोश भी पहाड़ों से उतरता है। दूर कहीं पुलिस की सीटी सुनाई पड़ती है। नकाबपोश सैनिक झपटते हुए बायीं ओर चला जाता है।

कुछ देर बाद चौथा नकाबपोश सैनिक मंच पर प्रवेश करता है। वह अपना नकाब हटाता है। वह कैप्टेन अनवर पाकिस्तानी मुजाहिदों का नेता है। अनवर टार्च जलाकर झोंपड़ी पर रोशनी डालता है। अचानक पुलिस की सीटी फिर सुनाई पड़ती है। अनवर चेहरा ढककर भागने लगता है। पीछे से इंस्पेक्टर पूरनसिंह एवं दो भारतीय सैनिकों का प्रवेश। इंस्पेक्टर पूरनसिंह टार्च जलाकर चारों तरफ पाकिस्तानी आतंकवादियों को ढूंढ़ता है। कुछ क्षणों की तलाश के बाद पूरनसिंह और सैनिकों की टुकड़ी नेपथ्य की ओर चली जाती है। **(प्रकाश बुझ जाता है)**

दूसरा दृश्य

स्थान : वही।
समय : दूसरे दिन। रात्रि के आठ बजे।

दृश्यबंध : प्रथम दृश्य के समान पृष्ठभूमि। झोंपड़ी का द्वार खुला हुआ है, मंच पर एक चारपाई और कुछ मोढ़े रखे हुए हैं।

(पर्दा खुलता है)

(चारपाई पर बैठकर शेख हसन हुक्का गुड़गुड़ा रहा है। हसन की वेशभूषा कश्मीरी किसानों की सी है। चारपाई के पास हसन की बैसाखी रखी हुई है)

हसन : रजिया ! रजिया बेटी !

रजिया : (**नेपथ्य से**) आई अब्बा।

(रजिया का प्रवेश। रजिया कश्मीरी फैरन पहने हुए है। चेहरे पर एक घरेलू शांत भाव)

हसन : बेटी, अब्दुल श्रीनगर से आ गया?

रजिया : नहीं अब्बा, भाईजान अभी तक नहीं आये।

हसन : मगर चिराग जले एक घंटे से अधिक हो गया। अब तक तो आखिरी मुसाफिर भी गुलमर्ग पहुँच गये होंगे।

रजिया : हो सकता है कि बस बीच रास्ते में बिगड़ गयी हो या हो सकता है कि भाईजान ही श्रीनगर से न चले हों।

हसन : हो सकता है कि अब्दुल किसी मुसीबत में फँस गया हो।

रजिया : नहीं-नहीं अब्बा, ऐसा नहीं सोचते। खुदा के फ़जल से सब कुछ खैरियत से होगा।

हसन : ऐसा ही हो।

(**नेपथ्य से आवाज**) शेख साहब! अरे ओ शेख साहब!

हसन : कौन इंस्पेक्टर साहब! आओ जी इंस्पेक्टर साहब!

(इंस्पेक्टर पूरनसिंह का प्रवेश। पुलिस ड्रेस में चुस्त एवं स्फूर्तिपूर्ण)

पूरन : कहो भाई शेख साहब, कुछ गमगीन दीख रहे हो! क्या बात है?

हसन : कुछ नहीं इंस्पेक्टर साहब! शाम को अब्दुल आने वाला था। अभी तक नहीं आया।

पूरन : अरे हाँ, एक फौजी जीप अभी आई है। ड्राइवर कह रहा था कि श्रीनगर की बस बीच रास्ते में बिगड़ गयी थी।

हसन : चलो ठीक है। अरे रजिया, चाचा के लिए गरमागरम चाय तो ला। और देख, साथ में मक्के की रोटियाँ। इंस्पेक्टर साहब को बहुत पसंद हैं।

पूरन : अरे नहीं, शेख साहब! आज ये रोटियाँ नहीं चलेंगी बस चाय काफी है।

हसन : अच्छा बेटी, दो गिलास गरमागरम चाय ही ला ।

रज़िया : जी अच्छा, तुरंत लाती हूँ ।

(रज़िया घर में जाती है)

पूरन : भाई शेख साहब, तुम्हारे यहाँ आकर घर का गम बिलकुल भूल जाता हूँ । लगता है कि जैसे अपने ही घर में बैठा हूँ ।

हसन : यह क्या कह रहे हो, इंस्पेक्टर साहब ! यह तो तुम्हारा ही घर है ।

पूरन : सो तो ठीक है, शेख साहब ! जब कश्मीर में मेरी पोस्टिंग हुई तो लोगों ने क्या-क्या नक्शे खींचे थे । जैसे हम दुश्मनों के बीच जा रहे हों । पर यहाँ हो हालात बिलकुल मुख्तलिफ हैं । यहाँ तो हमें हरेक घर में माता-पिता, भाई-बहन दिखाई पड़ते हैं ।

हसन : इंस्पेक्टर साहब, हम कश्मीरियों को दूर से नहीं समझा जा सकता । इन पहाड़ों की ओर देखते हो न ! इन सारी सख्त और सूखी चट्टानों के भीतर खालिस गंगाजल छलक रहा है । तुमने कभी डल लेक के चेहरे को देखा है ! उजला साफ आइने-सा चमकदार— यही सच्चा कश्मीर है ।

पूरन : ठीक कहते हो, शेख साहब ! अखरोट के फल की तरह कश्मीर के भी दो चेहरे हैं; दूसरे चेहरे को देखने के लिए वक्त और मेहनत की जरूरत है ।

(चाय के साथ रज़िया का प्रवेश । रज़िया चाय देकर चली जाती है)

पूरन : **(चाय पीते हुए)** आज की रात कितनी उजली और खुशनुमा है ! जी करता है कि इन घास के मैदानों में लोट जाऊँ । रात-भर कबड्डी खेलूं । मगर रह-रहकर हवा में एक अजीब-सी सनसनाहट उठती है । ऐसे खूबसूरत माहौल पर ऐसी मनहूस साया !

हसन : ऐसी क्या बात है, इंस्पेक्टर साहब ! कुछ खुलकर कहो न !

पूरन : अभी कुछ साफ नहीं है । सीज़फायर लाइन के उस पार दुश्मनों की सरगर्मियाँ बढ़ती जा रही हैं । इधर कुछ अजनबी

चेहरे भी देखे गये हैं। पीछा करने पर वे जंगलों में घुस गये।

हसन : इंस्पेक्टर साहब, भारतीय फौज भी कुछ कम नहीं है। कश्मीर पर दूसरा हमला शेर के मुँह में सिर डालने के बराबर होगा।

पूरन : सो तो ठीक है, शेख साहब ! पाकिस्तानी हुक्मरान जान-बूझ कर खुदकुशी न करना चाहेंगे। पर देखिये ऊँट किस करवट बैठता है ! अच्छा अब चलूं, शेख साहब, फिर मुलाकात होगी। आदाब अर्ज !

(पूरनसिंह का प्रस्थान)

हसन : रजिया !

(नेपथ्य से) आई अब्बा !

(रजिया का प्रवेश)

हसन : देख, हुक्के की चिलम बुझ गयी है। थोड़ा तम्बाकू डाल कर सुलगा ला।

रजिया : जी अब्बा !

(रजिया का प्रस्थान)

(अब्दुल का प्रवेश उम्र 25 वर्ष। कश्मीरी कुर्त्ता-सलवार और टोपी। एक झोले में कुछ सामान)

हसन : अरे अब्दुल ! आज तूने बहुत देर कर दी ! हम सब परेशान हो रहे थे।

अब्दुल : मैं खुद परेशान था। रास्ते में बस बिगड़ गयी। वो तो एक आर्मी इंजीनियर ने लिफ्ट दिया नहीं तो आज की रात रास्ते में हो कटती।

हसन : सब खुदा का शुक्र है।

(चिलम लेकर रजिया का प्रवेश)

रजिया : ओ भाईजान ! आदाब, भाईजान !

अब्दुल : आदाब !

रजिया : **(शरारत से)** सुना है भाईजान तुम रास्ते में खो गये थे !

अब्दुल : खो गया था ! तुमसे यह सब किसने कह दिया ?

रजिया : बड़ी-बड़ी खबरें तो सब जगह पहुँच जाती हैं। अच्छा भाईजान, हमारे अखबार और रिसाले तो ले आए हो न ?

अब्दुल : (झोला देते हुए) लो जी अपने अखबार और रिसाले ! इन्हें ढोते-ढोते तंग आ गया था।

रजिया : (अखबार और रिसाले को देखते हुए) वाह भाईजान, तुमने तो कमाल कर दिया ! इतने अखबार और रिसाले ! भाईजान जिन्दाबाद !

हसन : (हँसता है) पगली ! खजूर-सी लम्बी हो गई पर बचपना नहीं गया। सोचता हूँ कि इस साल इसके हाथ पीले कर दूँ। अनवर का कुछ पता लगा ?

अब्दुल : नहीं, पाकिस्तान जाने के बाद उसकी कोई खबर नहीं है। शायद वह वहाँ ठीकेदारी करता है। कोई कहता था कि अनवर पाकिस्तानी फौज में भरती हो गया है।

हसन : अनवर को पाकिस्तान गए दस साल से अधिक हो गया है। आखिर हम कब तक इंतजार करेंगे ! तुम इधर इस्लामाबाद गए थे ?

अब्दुल : नहीं, मैं इस्लामाबाद नहीं जा सका।

हसन : क्यों नहीं जा सके ? क्या फुरसत नहीं मिली ?

अब्दुल : नहीं, सो बात नहीं है। जब बिजनेस ही नहीं, तब फुरसत ही फुरसत है।

हसन : क्यों अब्दुल, तुम्हारा हाउस बोट खाली पड़ा है ?

अब्दुल : हमारा ही क्यों, झेलम डल के ज्यादातर हाउस बोट खाली पड़े हैं। मीरकदल की सभी दूकानों पर मक्खियाँ उड़ रही हैं। हम दिन-भर टूरिस्ट ब्यूटियों पर एड़ियाँ रगड़ते रहते हैं। दो-चार टूरिस्ट आते हैं पर उनसे किसी का क्या बनता है !

हसन : देखता हूँ कि यह सीज़न भी बैठे-बैठे बीतेगा।

अब्दुल : यही सीजन क्यों, कश्मीर में अब कभी बिजनेस नहीं पनप सकता। पनप रही हैं सिर्फ नेताओं की कतारें और सियासत के पैंतरे। हमें कुछ फैसला करना ही होगा।

हसन : कैसा फैसला, अब्दुल ?

अब्दुल : यही कश्मीर के बारे में। इस सियासत की बोझ से हमारा दम घुट रहा है। कश्मीर का अंजाम आखिरी तरह से तय हो जाना चाहिए।

रजिया : (अखबार से सिर उठाकर) ए भाईजान, तू तो इस बार बहुत बड़ी-बड़ी बातें कर रहा है।

अब्दुल : तू चुप रह रजिया ! अब्बा, मेरे खयाल से कश्मीर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच एक गेंद बन गया है। जिसने चाहा, उछाल दिया। मगर हमारी भी हस्ती है। हमारे भी हकूक हैं।

रजिया : (उठकर पास आती है) भाईजान, तू तो इस बार बहुत अचम्भे की बात कर रहा है !

अब्दुल : रजिया !

रजिया : कहाँ सुन लिया तूने यह सब ? (रुककर) अच्छा मैं समझ गयी। कहीं तू मेरे इन रिसालों को तो नहीं पढ़ रहा था ! अच्छा भाईजान, तूने इन रिआलों को सीधा पकड़ा था या उलटा ! तूने इन्हें जरूर उलटा पकड़ा होगा।

अब्दुल : मजाक बन्द कर रजिया !

रजिया : अच्छा तो मैं मज़ाक कर रही हूँ और तू लेक्चर दे रहा है वह सब बजनदार बातें हैं ! भाईजान, सियासत तेरे बस का रोग नहीं। तेरे दिमाग से बहुत ऊपर की चीज है। तुझे कुत्ते और गधे का किस्सा सुनाऊँ। एक धोबी के पास एक कुत्ता और एक गधा था···!

अब्दुल : मुझे नहीं सुनना तेरा किस्सा ! रजिया, तू एक घड़ी चुप नहीं रह सकती !

रजिया : हूँ, मैं चुप बैठूं। तू तो कुरान की आयत पढ़ रहा है न ! अच्छा सुन, कल श्रीनगर में फारूख साहब ने कहा कि कश्मीर और भारत का रिश्ता केवल सियासी नहीं रूहानी है। वह कयामत तक नहीं टूटेगा।

अब्दुल : यह फारूख साहब ने कहा। दूसरे लोग क्या कहते हैं ?

रजिया : दूसरों के कहने से क्या होता है ! हमने अपनी मर्जी से हिन्दुस्तान से रिश्ता जोड़ा था।

अब्दुल : पर वह फैसला आज गलत साबित हो चुका है।

रजिया : नहीं, वह फैसला कल भी ठीक था और आज भी ठीक है। याद है न जब पिछली बार वजीरे आज़म गुलमर्ग आये थे तो उन्होंने क्या कहा था कि मुझे कश्मीर पर फख्र है। कश्मीर भारत के वसूलों की जिन्दा नज़्म है।

अब्दुल : वसूल ! वसूल ! वसूल ! वसूलों की डालियों पर रोटियाँ नहीं लगतीं। यह सौदा हमें महँगा पड़ा है, बहुत महँगा !

हसन : अब्दुल, ऊपर की चढ़ाई हमेशा तकलीफदेह होती है। मगर इस जद्दोजहद का नतीजा हमेशा खुशगवार होता है।

अब्दुल : शायद ! पर अब्बा हमें तो बिज़नेस चाहिए। हम इस बंद गली में कब तक चक्कर लगायेंगे ! कोई रास्ता तो होना ही चाहिए।

हसन : जरूर मिलेगा। मायूस होने से काम नहीं चलेगा। सब्र छोड़ने की जरूरत नहीं है।

(नेपथ्य से थपथपाहट)

हसन : कौन ?

(पत्रकार श्यामलाल का प्रवेश। खादी का कुर्ता, पैजामा और जवाहर जैकेट। साथ में एक ट्रैवेलर बैग)

श्यामलाल : मैं हूँ श्यामलाल। कश्मीर यात्रा के लिए आया था। टनमर्ग से पैदल ही चल पड़ा। यहाँ पहुँचते-पहुँचते शाम हो गयी।

हसन : कहिये हम आपकी क्या खिदमत कर सकते हैं ?

श्यामलाल : रात-भर ठहरने की सुविधा चाहता हूँ। जो भी खर्च होगा, दूँगा।

अब्दुल : बात खर्च की नहीं है। पर शायद आपको यहाँ पूरा आराम नहीं मिले। आपने यहाँ किसी होटल में कोशिश नहीं की ?

श्यामलाल : मेरे पास होटल में ठहरने लायक सामान नहीं है। फिर मैं अपने देश की जमीन देखना चाहता हूँ। यहाँ के लोगों से मिलकर

उनके दुख-सुख की कहानी कहना चाहता हूँ। मुझे होटल की सस्कृति से सख्त नफरत है।

रजिया : आप कोई अखबारी नुमाइन्दे हैं?

श्यामलाल : अखबारी नुमाइन्दा तो नहीं हूँ, पर अपने देश और अपने लोगों के बारे में पत्र-पत्रिकाओं में लिखता हूँ।

हसन : बाबू, साहब, आप इसे अपना घर समझें। और जब तक मर्जी हो यहाँ रहें। हमारा भी छोटा-सा कुनबा है। यह है हमारा लड़का अब्दुल, श्रीनगर के एक हाउस बोट में काम करता है। और यह है हमारी बेटी, रजिया। इसके साथ आपकी खूब पटेगी। यह अखबार और रिसालों पर जान देती है।

श्यामलाल : आप सभी लोगों से मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई है।

अब्दुल : अच्छा अब्बा, आप बाबू साहब से बात करें। मैं अभी आता हूँ।

(अब्दुल का प्रस्थान)

हसन : आपको कश्मीर में आये कितने दिन हुए?

श्यामलाल : मैं कश्मीर में करीब 20-25 दिनों से हूँ। इधर-उधर कई जगह गया। श्रावण पूर्णिमा नजदीक है। सोचता हूँ अमरनाथ की यात्रा भी कर लूँ।

हसन : आप कश्मीर में नये आये हैं। इतने दिनों में आपकी क्या राय बनी?

श्यामलाल : मैं कश्मीर को पहली निगाह से ही मुहब्बत करने लगा हूँ। यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को मैंने छक कर पिया है। शंकराचार्य के मठ पर चढ़ कर जब मैंने पहली बार घाटी को देखा तो मुझे लगा कि कश्मीर सचमुच स्वर्ग है। किसी ने ठीक ही कहा है कि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।

रजिया : सो तो ठीक है।

श्यामलाल : पर यह विवरण भी अधूरा है। प्रकृति ने यहाँ के लोगों को अपने से भी सुन्दर गढ़ा है। ऐसा खुला हुआ दिल और ऐसी

मेहमानबाजी मैंने कहीं नहीं देखी।

हसन : बाबू साहब, यही यहाँ की तहजीब और तमद्दुन की खूबी है। यह ऋषियों की पूजा-भूमि रही है। हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम तीनों मज़हबों ने इस जमीन को जरखेज किया है।

रज़िया : आप तो श्रीनगर में भी रहे होंगे। आपने वहाँ के नौजवानों के नये जजबातों की धमक नहीं सुनी ?

श्यामलाल : सुनी है और बहुत नज़दीक से देखी भी है। कई सालों से यहाँ बाहरी लोगों के द्वारा आग के शोले फेंके जाते रहे हैं। आज कश्मीर की जिन्दगी में एक उबाल आ गया है। मुझे ऐसा लगता है कि कश्मीर फिर एक बार अपनी आत्मा खोज रहा है।

हसन : अच्छा रज़िया बेटी, बातें तो होती रहेंगी। बाबू साहब के खाने-पीने का बन्दोबस्त होना चाहिए।

रज़िया : जी अब्बा, अभी सब ठीक करती हूँ।

श्यामलाल : फिक्र की कोई बात नहीं है। मैं एक घंटे में घूम कर आता हूँ। इन उजली रातों में पहाड़ों के साये बहुत अच्छे लगते हैं।

रज़िया : ठीक है। हम आपके लिए इन्तज़ार करेंगे।

(श्यामलाल का प्रस्थान)

रज़िया : अब्बा, मैं अन्दर जा रही हूँ। खाने-पीने का इन्तजाम करना होगा।

हसन : ठीक है, जाओ।

(रज़िया अन्दर जाने को तैयार होती है। तभी नेपथ्य में किसी की छाया दिखाई पड़ती है)

रज़िया : कौन ?

(अनवर का प्रवेश। उम्र करीब 27-28 वर्ष। कश्मीरी किसानों की पोशाक, ऊपर से एक लबादा ओढ़े हुए)

अनवर : मैं हूँ अनवर !

हसन : अनवर !

रज़िया : अनवर भाई !

अनवर : हाँ, मैं हूं आपका भतीजा अनवर। यह तो रज़िया है न? बहुत लम्बी हो गयी है !

हसन : और तू तो इस बीच छोटा हो गया है न ! इतने दिन कहाँ रहे बरखुरदार ?

अनवर : वह एक लम्बा किस्सा है, चचाजान ! रोज़ी की तलाश में पाकिस्तान चला गया था। बड़े पापड़ बेले। फिर यहाँ का वीसा ही नहीं बनता था। किसी तरह आया।

हसन : जहाँ भी रहे, खत तो दिया होता। आने की भी कोई खबर नहीं। इस समय किस बस से आ रहे हो ?

अनवर : आपको धीरे-धीरे सब कुछ मालूम हो जायगा। इस समय मैं बहुत बड़े मकसद को लेकर चला हूँ। अब्दुल घर पर है न ?

हसन : हाँ, वह अभी अन्दर गया है। रज़िया जा अब्दुल को कह दे कि अनवर आया है। और हाँ, पास-पड़ोस में भी इलायची बँटवा दे कि अनवर पाकिस्तान से आ गया है।

अनवर : नहीं चचाजान, किसी को कहलाने की जरूरत नहीं है। सच तो यह है कि मेरे आने की खबर इस घर से बाहर नहीं जानी चाहिए। यह न मेरे हक में अच्छा होगा न आपके।

हसन : यह सब क्या कह रहे हो बरखुरदार !

अनवर : इस समय मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता। आप मुझे और मजबूर न करें।

हसन : तुमने तो परेशान-परेशान कर दिया। अच्छा मैं अब्दुल को खबर देता हूँ। रज़िया, तब तक तू अनवर से बातें कर।

(हसन का प्रस्थान)

अनवर : रज़िया, मुझे पहचानती है न ?

रज़िया : शुरू में भटक गई थी पर बाद में पहचान गयी। दस साल कोई मामूली अर्सा नहीं होता।

अनवर : हाँ, दस साल ! जुदाई के दस साल तो और भी लम्बे थे। पर हमारे मुसीबत के दिन अब लद गये। रज़िया, अब मैंने ऐसा इन्तजाम किया है कि आने वाले दिनों में हमारे पास सब कुछ

होगा—दौलत, इज्जत, रुतबा, शोहरत—सब कुछ।

रज़िया : मैं कुछ नहीं समझी, अनवर भाई !

अनवर : रज़िया, जिन्दगी एक जुआ है। मैंने अपनी सारी जिन्दगी एक ही दांव पर लगा दी है। किस्मत का पासा आज रात को ही गिरेगा और सब कुछ तय हो जायगा।

रज़िया : पाकिस्तान में अच्छी तरह रहे, अनवर भाई ?

अनवर : हाँ-हाँ, बहुत अच्छी तरह। रज़िया, मैं बीती हुई रातों की सियाही नहीं देखता। आने वाले आफताब का इन्तजार करता हूँ। हमारी-तुम्हारी जिन्दगी में बहुत बड़ा आफताब उगने वाला है—बहुत बड़ा आफताब !

(अब्दुल का प्रवेश)

अब्दुल : अनवर भाई !

अनवर : अरे अब्दुल !

अब्दुल : तुमने बहुत सताया, अनवर भाई, बहुत सताया।

(अब्दुल अनवर को सीने से लगाता है)

(रज़िया का प्रस्थान)

अब्दुल : कब आये, अनवर भाई ? कहाँ रहे इतने दिन ? सालों-साल गुजर गये पर एक खत भी नहीं डाला !

अनवर : अब्दुल, इन सवालों का जवाब फिर कभी दूंगा। इस समय एक बहुत अहम मसले पर तुम्हारी मदद की जरूरत है।

अब्दुल : मेरी मदद ! क्या बात है भाईजान ?

अनवर : अब्दुल, यह कोई खानगी मामला नहीं है। यह हमारी कौम का सवाल है। तुम्हें मालूम है कि कश्मीर के सवाल पर भारत सरकार ने हमें कितना धोखा दिया है ! अब वह वक्त आ गया है कि हम इस धोखे का जवाब दें। हमें अपने मादरे वतन को इन काफिरों की गुलामी से आज़ाद कराना है।

अब्दुल : कहते जाइये, भाईजान !

अनवर : अब्दुल, पाकिस्तान की शुरू से कोशिश रही है कि कश्मीर एक इस्लामी हुकूमत बने। हमारा साझीदार हमारा हम-

वतन। पर भारत के चन्द कश्मीरी गुर्गों ने हमें नाकामयाब कर दिया। कभी अब्दुल्ला खड़ा हो गया तो कभी बख्शी। आज फारूख चांदी के चंद टुकड़ों पर इन गद्दारों की सदारत कर रहा है।

अब्दुल : मैं गौर से सुन रहा हूँ, भाईजान !

अनवर : भारत की हजारों-हजार फौज हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अगर कश्मीर की रियाया हमारी मदद करे सब ठीक हो जायगा। भारतीय हुकूमत का बेड़ा एक दिन में ही गर्क हो जायगा।

अब्दुल : आप कहना क्या चाहते हैं, भाईजान ?

अनवर : गौर से सुनो अब्दुल ! पाकिस्तान ने हमेशा कश्मीरियों के दर्द को महसूस किया है। उसकी वकालत की है। उसके लिए खून बहाया है। आज पाकिस्तान ने कश्मीर की आज़ादी के लिए नया प्लैन बनाया है। हम सब मिलकर इस प्लैन को कामयाब करें।

अब्दुल : साफ-साफ कहें, अनवर भाई !

अनवर : हाँ सुनो। पाकिस्तान ने कश्मीर की आज़ादी के लिए मुजाहिदों की एक फौज बनाई है। आज रात यह फौज छोटी-छोटी टुकड़ियों में कश्मीर की घाटी में घुसपैठ कर रही है। और अब्दुल, मैं इसी मुजाहिद दस्ते का अफसर हूँ।

अब्दुल : अनवर भाई, आप !

अनवर : घबराओ मत अब्दुल, मौके की नज़ाकत को समझो। मुझे तुम्हारी मदद की सख्त जरूरत है।

अब्दुल : मैं, मैं क्या कर सकता हूँ ?

अनवर : तुम बहुत कुछ कर सकते हो ! तुम यहाँ के माहौल से पूरी तरह से वाकिफ़ हो। सबसे पहले यहाँ की फौजी चौकी को बरबाद करना है। इसके बाद हमें श्रीनगर तक कोई नहीं रोक सकता।

अब्दुल : लेकिन, अनवर भाई···!

अनवर : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं । अब्दुल, यहाँ की भारतीय हुकूमत ने तुम्हारे लिए क्या किया है? थोड़ी-सी सड़कें, थोड़ी-सी तिजारत और थोड़े-से सिक्के ! क्या कश्मीर की यही कीमत है? इधर दो सालों से कश्मीर का सारा बिजनेस ठप्प है। हर तरफ रायशुमारी की आवाज़ उठ रही है। यही है कश्मीर की आज़ाद आवाज़ !

अब्दुल : यह तो ठीक है अनवर भाई ! इधर हमारे दो सीजन बहुत बुरे बीते हैं।

अनवर : अब्दुल, तवारीख ने कश्मीर को एक चौराहे पर खड़ा कर दिया है। वक्त का तकाज़ा है कि हम मौके को पहचानें और पाकिस्तान की दोस्ती के हाथ को थामें। कामयाबी हमारा इन्तजार कर रही है।

अब्दुल : अनवर भाई !

अनवर : बहुत सोचने का वक्त नहीं है अब्दुल ! यह लो मैं तुम्हारे लिए एक तोहफा लाया हूँ। ये हैं एक लाख रुपये। मैं चाहता हूँ कि तुम इनसे एक हाउस बोट खरीदो।

अब्दुल : एक लाख रुपये ! मैं आपसे रुपये कैसे ले सकता हूँ?

अनवर : तुम नहीं ले सकते तो क्या हुआ ! लो रखो, रज़िया के दहेज में काम आयेगा।

अब्दुल : रज़िया का दहेज ! जैसी आपकी मर्जी ! (रुपये ले लेता है)

अनवर : मैं तुम्हें एक छोटी-सी पोटली दूंगा। मैं जानता हूं कि तुम फौजी चौकी में आते-जाते हो। उस चौकी में मिलने के बहाने जाना और इस पोटली को कहीं रख देना। उस चौकी के सफाये के लिए यह काफी है।

अब्दुल : कर सकूँगा मैं यह सब !

अनवर : कुछ मुश्किल नहीं है। अच्छा मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ। एक घंटे में लौटूंगा। देखना मेरे बारे में किसी को कानों-कान खबर न हो।

अब्दुल : अच्छा ठीक है।

(अनवर का प्रस्थान। अब्दुल बेचैन-सा टहलता है)
(हसन का प्रवेश)

हसन : अरे, अनवर चला गया ?

अब्दुल : हाँ, अनवर भाई कुछ काम से बाहर गये हैं। करीब घंटे-भर में लौटेंगे।

हसन : काम से ! ऐसा कौन काम था ?

अब्दुल : यह मैं ठीक से नहीं बता सकता। अनवर भाई यहाँ एक बहुत बड़ा मकसद लेकर आये हैं।

हसन : बड़ा-सा मकसद ! अनवर भी ऐसी ही उल्टी-सीधी बातें कर रहा था। आखिर माजरा क्या है ?

अब्दुल : (धीरे से) सुनिये अब्बा ! आज हम एक बहुत बड़े इंकलाब के दरवाज़े पर खड़े हैं। अनवर भाई पाकिस्तान की तरफ से कश्मीर में बहुत बड़ी बगावत मुनज्ज़म कर रहे हैं। आज की रात पाकिस्तान के मुजाहिदों की एक फौज कश्मीर की घाटी में घुसपैठ कर रही है। अनवर भाई इस गुरिल्ला फौज के अफसर हैं।

हसन : यह क्या कह रहे हो, अब्दुल ! यह तो बड़ी खौफ़नाक खबर है। कश्मीर में फिर मुजाहिद ! हम बरबाद हो जायेंगे। अब्दुल, हम बिलकुल बरबाद हो जायेंगे।

अब्दुल : अब्बा, सब ठीक हो जायगा। आखिर यह सब एक दिन होना ही था। आज वह मौका आ गया है। एक बार सभी बातों का फैसला हो जायगा।

हसन : तुम बिलकुल बच्चे हो, अब्दुल ! तुम इन मुजाहिदों को नहीं जानते। कश्मीर एक बार इन मुजाहिदों को झेल चुका है। आग, खून, बदज़नी का वह कहर ! कश्मीर के वे आंसू अभी तक नहीं सूखे हैं। यहाँ की सैकड़ों बस्तियाँ, यहाँ की सैकड़ों बहू-बेटियाँ इस कहानी को कहने के लिए आज भी जिंदा हैं।

अब्दुल : वह कबायलियों का हमला था, अब्बा। इस बार मुजाहिदों

की फौज है। इसे पाकिस्तान ने ट्रेंड किया है। इसके अनवर जैसे अफसर हैं।

हसन : नहीं, अब्दुल नहीं। मुझे अफसोस है कि अनवर इस गिरोह में शामिल हो गया। ये मुजाहिद कश्मीर के सुख-चैन को बरबाद कर देंगे। यह फूलों की वादी जल कर खाक हो जायगी।

अब्दुल : यह फूलों की वादी कभी खाक नहीं होगी। इस वादी पर एक काली साया है। इसे हटने दो अब्बा। फिर इस वादी के गोशे-गोशे में ऐसे हसीन गुलाब खिलेंगे जो दुनिया ने कभी न देखे होंगे।

हसन : इस देश की जमीन में नफरत के बीज बोकर तुम कौन-सा गुलाब खिलाओगे! इस बीज के पनपते ही इस देश की तहजीब और तमद्दुन सब कुछ खत्म हो जायगा। आसमाँ से बस नफरत की आँधी उठेगी और इंसान का सारा ज़मीर जल जायेगा।

अब्दुल : अपने को सँभालिये, अब्बा! हमें अनवर की मदद करनी चाहिए। अनवर हमारा भाई है। रज़िया का मँगेतर है। अगर कुछ बिगड़ा तो अनवर की मौत तय है। फिर हमारी गुलामी भी मुस्तकिल हो जायगी।

हसन : कौन कहता है कि कश्मीर गुलाम है! यह महज़ एक नारा है! एक झूठ है! एक फरेब है!

अब्दुल : अनवर के बारे में फिर से सोचिए, अब्बा। दस साल के बाद आया है। अगर उसे कुछ हो गया तो रज़िया का क्या होगा? रज़िया ने दस साल बड़ी बेकली से काटे हैं। रज़िया उससे कितनी मुहब्बत करती है!

हसन : मैं कुछ नहीं सोच सकता···मैं कुछ नहीं सोच सकता···रज़िया···अनवर···कश्मीर···मेरी रूह में इतने काँटे किसने उगाये हैं···मुझ पर रहम करो···उधर देखो···ये पेड़···पहाड़···चाँद इस तरह क्यों घूम रहे हैं···मुझे क्या हो गया है···!

(हसन के पैर लड़खड़ाते हैं। अब्दुल हसन को सँभालने की कोशिश करता है)

हसन : मुझे इतना तंग मत करो ''मैं कहता हूँ, अब्दुल, मुझे इतना तंग मत करो'''रज़िया'''रज़िया !

(हसन बेहोश होकर गिर पड़ता है)

(रज़िया का प्रवेश)

रज़िया : क्या हो गया, अब्बा को ? अब्बा ! अब्बा !

अब्दुल : थोड़ी-सी बेहोशी आ गयी है। जा जाकर पानी ले आ।

(रज़िया दौड़कर पानी लाती है। दोनों मुँह पर छींटे देते हैं। हसन को होश आता है)

हसन : कौन रज़िया ! रज़िया बेटी ! अब्दुल और अनवर कश्मीर को मुजाहिदों के हाथ बेच देना चाहते हैं।

रज़िया : यह सब क्या है, भाईजान ?

अब्दुल : रज़िया, आज रात कश्मीर में बहुत बड़ा इंकलाब हो रहा है। पाकिस्तान हमारी मदद कर रहा है। पाकिस्तान के हज़ारों मुजाहिद आज रात कश्मीर में दाखिल हो रहे हैं।

रज़िया : इन बातों से अनवर भाई का क्या लगाव है ?

अब्दुल : अनवर भाई इस मुजाहिद फौज के अफसर हैं। रज़िया, हमें इन इंकलाबियों की मदद करनी चाहिए।

रज़िया : क्या अनवर भाई इसी मकसद को लेकर आये हैं ?

अब्दुल : ठीक से समझो, रज़िया। कश्मीर की आत्मा गुलामी से सिसक रही है। इस देश को एक जेहाद का इंतजार था। हमें इस मौके से फायदा उठाना चाहिए। रजिया, अब यह मुल्क एक आज़ाद इस्लामी हुकूमत बनेगा।

रज़िया : तुम मेरे सवाल को भूल गये। क्या अनवर भाई के पाकिस्तान से आने का सबब यही है ?

अब्दुल : ठीक से समझो, रज़िया ! अनवर ने हमें एक लाख रुपये दिये हैं। चाहे हम उससे हाउस बोट खरीदें या तुम्हारे दहेज में खर्च करें।

रज़िया : एक लाख ! (**व्यंग्यात्मक हँसी हँसती है**) चाहे हम उससे हाउस बोट खरीदें या दहेज में खर्च करें। वाह, कैसी दरिया-दिली है !

अब्दुल : तुम कहना क्या चाहती हो !

रज़िया : मैं तो तुम्हारी तारीफ ही कर रही थी। और सुनो, तुम अभी तक जो इंकलाबी तकरीर कर रहे थे वह तुम्हारी नहीं, एक लाख रुपये की तकरीर थी।

अब्दुल : (**गुस्से से**) रज़िया !

(**इंस्पेक्टर पूरनसिंह का प्रवेश**)

पूरन : शेख साहब, आपके यहाँ कोई बाहरी आदमी आया है ? मझोला कद, कम्बल ओढ़े हुए, हाथ में स्टेन गन !

हसन : आइये बैठिये, इंस्पेक्टर साहब !

पूरन : यह बैठने का समय नहीं है। लगता है कि दुश्मन के आदमी धोखे से हमारी सरहद में घुस आये हैं।

अब्दुल : यहाँ कोई नहीं आया है, इंस्पेक्टर साहब ! हमने यहाँ ऐसे किसी आदमी को नहीं देखा।

पूरन : मैं भी यही सोचता था। पर हमारे सिपाही कह रहे थे कि उन्होंने एक मुजाहिद को इस घर में घुसते देखा था। खैर, रात में होशियार रहेंगे। आज हमारे सख्त इम्तिहान का दिन है।

(**इंस्पेक्टर पूरनसिंह का प्रस्थान**)

हसन : अब्दुल, यह सब क्या हो रहा है ?

रज़िया : मैं भी यही सवाल पूछना चाहती हूँ। क्या हम बेबस-बेजुबान इतने बड़े साजिश में धकेल दिये जायेंगे ?

अब्दुल : तवारीख की लहर आज कश्मीर को छू रही है। कश्मीर का मुस्तकबिल फिर से गढ़ा जा रहा है। हम अब इस इंकलाब को नहीं रोक सकते।

रज़िया : यह सब झूठ है। बड़ी-बड़ी बातों का ढोंग है। कश्मीर को इन मसीहाओं की कोई जरूरत नहीं है। यह कश्मीर का मुस्तकबिल नहीं है। ये लोग अवाम के सीने पर सोने की मीनार

खड़ा कर रहे हैं।

अब्दुल : मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता !

रज़िया : मैं भी तुमसे बहस नहीं करना चाहती। अनवर भाई कहाँ हैं ? तुम्हें तो मालूम ही होगा।

अब्दुल : अनवर भाई बाहर गये हैं। आते ही होंगे।

(श्यामलाल का प्रवेश)

श्यामलाल : शेख साहब ! शेख साहब !

हसन : क्या बात है, बाबू साहब ?

श्यामलाल : आपके पास कुछ बाल्टियाँ तो होंगी।

हसन : क्या बात है, बाबू साहब ?

श्यामलाल : बड़ी भयानक बात है ! पश्चिमी पहाड़ी के ऊपर गाँवों में आग लग गयी है। मैं देख आया हूँ। पूरी बस्ती सुलग रही है। फौजी मदद पहुँच गयी है, पर आग काबू में नहीं आ सकी है।

रज़िया : ऊपरी गाँवों में आग ! मैं अभी बाल्टियाँ लेकर आती हूँ।

(रज़िया भीतर जाती है)

अब्दुल : आप इस आग को बुझा सकेंगे, बाबू साहब ?

श्यामलाल : कम-से-कम मदद कर सकता हूँ। मैंने फायर-फाइटिंग की ट्रेनिंग ली है। कोशिश करने से बहुत कुछ किया जा सकता है।

(बाल्टियाँ लेकर रज़िया का प्रवेश)

श्यामलाल : मैं जा रहा हूँ, शेख साहब ! आग बुझने पर आऊँगा।

(श्यामलाल का प्रस्थान)

अब्दुल : इस आग को कौन बुझा सकता है ! यह आग नहीं बुझेगी !

रज़िया : पड़ोसियों के घर सुलग रहे हैं और तुम चैन की वंशी बजा रहे हो ! लेकिन आग लगाने से आग बुझाना ज्यादा मुश्किल है। मैं जरा बाहर जा रही हूँ, अब्बा !

अब्दुल : तुम इस समय बाहर कैसे जा सकती हो ?

रज़िया : मुझे कोई नहीं रोक सकता। मैंने भी एक जरूरी फैसला कर

लिया है। आप घबड़ाइये मत, मैं अपनी हिफाज़त कर सकती हूँ।

हसन : मुझे भी ले चलो, रज़िया ! मैं भी शायद कुछ मदद कर सकूँ।

रज़िया : ऐसी बीमारी को लेकर आप पहाड़ पर नहीं चढ़ सकते। आप फिक्र न करें, मैं जल्दी ही आऊँगी। इस साजिश से लड़ना जरूरी है। चाहे इसकी कीमत कुछ भी हो।

(रज़िया का प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

स्थान : गुलमर्ग की घाटी।

समय : रात के ग्यारह बजे।

(हसन बेचैनी से टहल रहा है)

(अब्दुल का प्रवेश)

हसन : तुम आ गये ! रज़िया कहाँ है ?

अब्दुल : इधर-उधर देख आया। मुझे रज़िया कहीं दिखाई नहीं पड़ी।

हसन : तुम पहाड़ की तरफ गये थे ?

अब्दुल : उधर जाना आसान नहीं है। हर तरफ आग के बगूले साँस ले रहे हैं। बेतरह भाग-दौड़ है। वहाँ जाना खतरे से खाली नहीं है।

हसन : यह क्यों नहीं कहते कि उधर जाना नहीं चाहते थे ! अपनी रोपी हुई बरबादी के आलम को तो देख लेते !

अब्दुल : रज़िया के बारे में मैं तो खुद फिक्रमंद हूँ।

हसन : या खुदा, रज़िया पर अपने रहमोकरम का साया रखना। मेरी बच्ची एक आग के समुद्र से उलझ गयी है। उसकी हिफाज़त करना।

अब्दुल : मैंने तो कितना मना किया, पर उसने जानबूझकर यह खतरा उठाया।

हसन : ये सारे बवंडर तुम्हीं लोगों के उठाये हुए हैं। तुम इस साजिश में खुशी से शामिल हुए हो।

अब्दुल : अब्बा !

हसन : तुम लोगों ने ऐनी आग लगाई है जिससे कश्मीर का घर-घर सुलग उठेगा।

अब्दुल : यह कोई मामूली आग नहीं है, अब्बा ! यह एक इंकलाबी मशाल है। कश्मीर में उगने वाली नयी सुबह की सुर्खी है।

हसन : यह कैसा इंकलाब है जो हमारी जिन्दगी को मौत से तौल रहा है ! अपने जाने-पहचाने कश्मीर को खत्म कर तुम किस सुबह का इंतजार कर रहे हो !

अब्दुल : यह पुराना कश्मीर जितनी जल्दी खत्म हो जाय तो अच्छा है। इन खंडहरों को ढह जाने दो, अब्बा, तभी एक नये कश्मीर की बुनियाद पड़ेगी। एक आज़ाद इस्लामी हुकूमत।

हसन : इस्लाम ! इस्लाम ! इस्लाम इंसानियत का फलसफा है, अब्दुल ! और तुम कश्मीर की रूह को भी नहीं पहचानते। तुम्हारी नयी हुकूमत में कश्मीर और इस्लाम दोनों घुटकर मर जायेंगे।

अब्दुल : अब्बा, हम चाहकर भी इस कौमी जद्दोजहद से अलग नहीं हो सकते। कोई चारा नहीं है।

(रज़िया का प्रवेश)

हसन : तू आ गयी बेटी ! मैं तेरे लिए बेहद परेशान था।

रज़िया : अब्बा, मैं बिलकुल ठीक हूँ। पर ऊपरी पहाड़ के गाँव आग की पूरी लपेट में आ गये थे।

हसन : तू ऊपर पहाड़ पर भी गयी थी, बेटी ?

रज़िया : इंस्पेक्टर साहब ने हमें ऊपर गाँव में जाने नहीं दिया। अखबारी नुमाइन्दे श्यामलाल ने बहुत मेहनत की नहीं तो पूरी बस्ती जल कर खाक हो जाती।

अब्दुल : श्यामलाल ने यह सब किया ! अब वह कहाँ है ?

रज़िया : मैंने उसे पहाड़ से उतरते देखा था।

(नेपथ्य से गोली चलने की आवाज। श्यामलाल की कराह सुनाई पड़ती है)

हसन : यह कैसी आवाज है ! मुझे लगता है कि श्यामलाल पर किसी ने वार किया है !

(अनवर का प्रवेश)

रज़िया : आप अनवर भाई ! अभी-अभी बंदूक चलने की आवाज़ आई है। आपने कुछ देखा है ?

अनवर : हाँ, मैंने देखा है ! एक भारतीय कुत्ता इधर-उधर सूंघ रहा था। उसे किसी ने गोली से उड़ा दिया।

हसन : क्या मतलब ?

अनवर : यह भारतीय सेठ जो यहाँ ठहरा हुआ था, अब इस दुनिया में नहीं है !

हसन : यह क्या कह रहे हो, अनवर ! हमारे मेहमान का खून !

रज़िया : यह सब क्या हो रहा है ! इन बेगुनाह मासूमों की हड्डियों पर कौन-सा निज़ाम खड़ा किया जा रहा है ! यह जुल्म है, सरासर जुल्म है !

(खून से तरबतर श्यामलाल का प्रवेश)

हसन : अरे बाबू साहब !

श्यामलाल : आह, मैं तो चला···शेख साहब ! पर मुझे गर्व है···कि यह जान देश के काम आई। (अनवर की तरफ देखकर) अरे यह यहाँ···यही तो खूनी है, शेख साहब···इसी शैतान ने ऊपर गाँवों में आग लगाई है···यही देश···का···दुश्मन है···नीच ···पापी···हत्यारा !

(श्यामलाल गिर पड़ता है)

अब्दुल : (दौड़कर देखता है) सब कुछ खतम हो गया !

हसन : बाबू साहब का खून ! हमारे ही घर में हमारे मेहमान का खून ! यह तुमने क्या किया, अनवर ! आग···लूट···खून ! पाकिस्तान से बहुत अच्छी सौगात लेकर आये हो···रज़िया बेटी के लिए कितना खूबसूरत दहेज···रज़िया बेटी के लिए

कितना खूबसूरत दहेज !

(व्यंग्यात्मक अट्टहास करता है। फिर रोने लगता है। रोते-रोते बेहोश हो जाता है)

रजिया : अब्बा !

(रजिया, अब्दुल दौड़कर जाते हैं)

अब्दुल : (नाड़ी थामकर) घबराने की कोई बात नहीं है।

रजिया : पाकिस्तान से बड़ी अच्छी सौगात लेकर आये हो अनवर भाई ! आग, लूट, खून ! अब्बा ने ठीक ही कहा है—मेरे लिए कितना खूबसूरत दहेज है ! क्या इन्हीं मासूमों के खून से मेरी चुनरी रँगी जायगी ! इसी खून को माँग में भरकर मैं सुहागन बनूँगी !

अनवर : यह क्या कह रही हो रजिया ! इंकलाब एक तूफान, एक जलजले की तरह फटता है। बड़ी-बड़ी इमारतें टूट-टूट कर गिरती हैं। मासूमों के खून से जमीन लाल हो जाती है। इसमें डरने की कोई बात नहीं है। इसी तबाही से जिन्दगी की नयी कोंपलें निकलती हैं।

रजिया : देश को दोज़ख की आग में जलाकर तुम किस बहिश्त को गढ़ रहे हो ! मैंने बचपन में एक चुड़ैल की कहानी सुनी थी। उसके साथ-साथ आग की लपटें चलती थीं। नगरों, सड़कों, बस्तियों सभी जगह वह मौत का पैगाम लेकर चलती थी। हर जगह वह चिल्लाती थी—किसको खाऊँ, किसको खाऊँ, किसको खाऊँ !

अनवर : इस भारतीय जासूस की लाश को देखकर डर गयी हो, रज़िया। पर मैं तुमको इतना कमजोर नहीं समझता था। रजिया, मैं एक फौजी अफसर हूँ। मेरी मँगेतर इतने कमजोर दिल की !

रजिया : अच्छा है कि तुमने इसका भी जिक्र कर दिया। मैंने तुम्हारे लिए दस साल तक इंतजार किया था। मैं तुम्हारे लिए उम्र भर इंतजार कर सकती थी। पर आज तुम जिस राह पर मिले

हो, जहाँ मेरे जज़्बात खत्म हो गए हैं। मैं तुम्हारे साथ तुम्हारी राह पर नहीं चल सकती।

अनवर : रज़िया !

रज़िया : तुमने जो आग लगायी है उससे चंद झोंपड़ियाँ ही नहीं जलीं, एक मासूम ख्वाब भी जलकर राख हो गया। तुमने जिन लोगों का खून किया है उसके साथ-साथ एक लड़की के अरमानों का भी खून हो गया। मँगनी की बात भूल जाओ, बिलकुल भूल जाओ !

अनवर : रज़िया, यह क्या कह रही हो ?

रज़िया : अनवर मियाँ, जज़्बात खूबसूरत साज़ होता है। इसे बजाने के लिए बड़ी नज़ाकत चाहिए। ज़रा-सा ज्यादा खींचने पर तार टूट जाते हैं। और टूटे हुए तार फिर नहीं जोड़े जा सकते।

अनवर : यह सब क्या गोरखधंधा है ! तुमने कुछ सुना, अब्दुल ?

अब्दुल : मैंने सब कुछ सुना है। रज़िया ठीक कहती है। आपने तार को इतना चढ़ाया कि उसके सौ टुकड़े हो गये हैं।

अनवर : तो तुम भी फलसफ़ा बघारने लगे। यह तो कहो कि मेरे काम का क्या हुआ ? तुमने फौजी चौकी पर जाने को कहा था, कब जा रहे हो ?

अब्दुल : मैं यह काम नहीं कर सकूँगा, अनवर भाई ! मैं इस तनाव को और नहीं झेल सकता। अपने घर में आग लगाकर मैं देश की कौन-सी भलाई करूँगा ?

अनवर : यह क्या कह रहे हो, अब्दुल ! यह तो बड़ी भयानक बात है। तुम इस तरह अपनी जिम्मेवारी से नहीं भाग सकते।

अब्दुल : मैंने सब कुछ सोच लिया है। मैं आपका काम नहीं कर सकूँगा।

अनवर : यह मुफ्त का काम नहीं है, अब्दुल ! मैंने तुम्हें एक लाख रुपये दिये हैं। पाकिस्तानी सरकार के कीमती रुपये।

अब्दुल : पाकिस्तानी सरकार के रुपये ! आपने अच्छा किया, बता दिया। इन घिनौने रुपयों से रज़िया का दहेज नहीं खरीदा जा सकता।

यह रहे आपके रुपये और यह रही आपकी सौगात।

(अब्दुल अनवर का झोला और थैला देता है)

अनवर : यह बात इतनी आसानी से तय नहीं होगी। मैंने जिन्दगी में हारना नहीं सीखा। मैं अपनी हार नहीं कबूल करूँगा। **(स्टेनगन उठाकर)** तुम्हें यह काम करना ही होगा, चाहे जैसे भी हो। बोलो तुम्हें जिन्दगी चाहिए या मौत !

रजिया : अनवर भाई !

अनवर : तुम्हें एक घंटे का वक्त दे सकता हूँ। तुमने इस बीच काम पूरा न किया तो समझ लो—। उस जासूसी कुत्ते की तरह तुम्हारी लाश तड़पेगी।

(पूरन सिंह और दो सिपाहियों का प्रवेश)

पूरन : हैंड्स अप।

अनवर : अरे भारती फौज ! इसे यहाँ किसने बुलाया ?

(स्टेनगन तानता है)

रजिया : अब कुछ नहीं हो सकता, अनवर भाई ! तुम पकड़े गये हो !

अनवर : या खुदा बुरे फंसे।

(हाथ उठा देता है। पूरन उसे हथकड़ी पहनाता है)

पूरन : मैं तुम्हें जासूसी, खून और आगजनी के जुर्म में गिरफ्तार करता हूँ **(अब्दुल से)** शेख साहब को क्या हुआ है ?

अब्दुल : कुछ नहीं। थोड़ी बेहोशी आ गयी है।

पूरन : खैर, मैं थोड़ी देर बाद आऊँगा। तब तक मैं इस पाकिस्तानी मुजाहिद से निपट लूँ। **(सिपाहियों से)** इस शहीद पत्रकार की लाश जीप पर रखो। इसने देश के लिए प्राण दिये हैं। इसका क्रियाकर्म सैनिक सम्मान के साथ होना चाहिए।

(पूरनसिंह, सिपाही और अनवर का प्रस्थान)

(हसन की बेहोशी टूटती है)

हसन : कौन अब्दुल ! रजिया ! अनवर कहाँ है ?

अब्दुल : अनवर को पकड़ कर इंस्पेक्टर साहब ले गये।

हसन : ले गये ! मैं जानता था। अब रज़िया का क्या होगा ?

रज़िया : जो कुछ हुआ, अच्छा ही हुआ। अनवर भाई एक पाकिस्तानी मुजाहिद थे। इसलिए वे आपके भतीजे, अब्दुल के भाई और मेरे शौहर नहीं हो सकते थे। जेल उनके लिए सही जगह है। (अब्दुल) अच्छा भाईजान ! हम इन रुपयों को अपने पास नहीं रख सकते।

अब्दुल : हाँ, मैं भी यही सोच रहा था। हम इसे गांवों की इमदाद में दे देंगे जिन्हें मुजाहिदों ने फूंक दिया है।

हसन : यह ठीक है। खुदा का फजल है कि हम एक बार और बच गए। एक बहुत बड़ा तूफान हमारे दरवाजे पर सर पटक कर लौट गया। हम सब मिलकर खुदा की इबादत करें।

(सब बैठकर इबादत करते हैं)

पटाक्षेप

एक वैचारिक एकांकी

ज़मीन, जो किसी की नहीं है

(No Man's Land)

(वियतनाम युद्ध पर आधारित एक रचना)

पात्र-परिचय

1.	वान क्वान	एक वियतनामी सैनिक	30 वर्ष
2.	वान डीयम	बौद्ध भिक्षु	40 „
3.	वान चो	थीवान का पड़ोसी	28 „
4.	चौंग	एक खोमचेवाला	40 „
5.	वान काश	एक वियतनामी सैनिक	25 „
6.	थुआन	एक वियतकौंग सैनिक	24 „
7.	डौंग	थीवान का पुत्र	8 „
8.	एक अमेरिकन अफसर		35 „
9.	एक वियतकौंग कमांडर		36 „
10.	थीवान	क्वान की पत्नी	26 „

स्थान : उत्तरी-दक्षिणी वियतनाम की सीमा पर एक गाँव, लोकडीयन।

समय : फरवरी 1962, सूर्योदय से पहले

दृश्य-सज्जा : क्षितिज पर पहाड़ों की एक पात। बायीं तरफ एक झोपड़ी। दायीं ओर एक छोटा बौद्ध मंदिर।

(पर्दा खुलता है)

(प्रकाश धीरे-धीरे तेज होता है। झोपड़ी के द्वार से

मंच पर थीवान का प्रवेश। थीवान ओखली में चावल कूटती है)

(बौद्ध भिक्षु वान डीयन का प्रवेश)

(पूजा समाप्त कर वान डीयन थीवान के सामने खड़ा है। थीवान उसे झोपड़ी से लाकर चावल की भिक्षा देती है)

वान डीयम : भगवान बुद्ध तुम्हारा मंगल करें। बेटी के मुख पर दुःख की गहरी छाया है। इस विषाद का क्या कारण है ?

थीवान : यह दुःख भगवान का ही दिया हुआ है, भिक्षुवर ! वर्षा के बादलों की तरह यह दुःख आज पूरे जीवन पर छा गया है।

वान डीयम : जो दुःख भगवान ने दिया है उसका निवारण भी भगवान ही के अधीन है। पर हम मिलकर दुःख के ताप को कम कर सकते हैं। बोलो बेटी !

थीवान : पूज्यवर, आज से छः-सात वर्ष पूर्व से हमारे बच्चे का पिता क्वान लापता है। स्त्री के लिये इससे बढ़कर कौन-सा दुःख हो सकता है।

वान डीयम : छः-सात वर्षों से लापता ! यह हुआ कैसे ? सब कुछ कहो, बेटी !

(थीवान वान डीयम को चौकी पर बैठाती है)

थीवान : यह एक दुःखद कहानी है। आज से कुछ वर्ष पूर्व देश में एक अजीब तूफान आया था। सभी तरफ बस हत्या और लूटमार। कभी उत्तर और कभी दक्षिण से सेनाएँ आतीं और लगातार लड़ाइयाँ चलती रहतीं।

वान डीयम : हाँ, मुझे देश का वह दुर्दिन याद है।

थीवान : उस आग में हमारा छोटा-सा सुख जल गया। हमारे खेत-खलिहान बरबाद हो गये। हम कई वर्षों तक अपने खेतों को नहीं जोत सके और बुरी तरह कर्ज में जकड़ गये। इन सभी परेशानियों से ऊब कर क्वान फौज में भरती हो गया। मैंने बहुत मना किया। उसे सुझाया कि दूसरों की

तरह हम भी खेत बेचकर कर्ज अदा कर दें और शहर चले जायें। पर वह तैयार नहीं हुआ। उसने हमेशा यही कहा कि धरती अपनी माँ है, उसे नहीं बेचा जा सकता।

वान डीयम : धरती सचमुच हमारी माँ है। हम उससे कभी अलग नहीं हो सकते।

थीवान : हाँ, क्वान भी यही कहता था। कुछ दिनों तक दूर-दूर जगहों से उसके पत्र आते रहे। उसे वीरता के लिए कई पदक मिले। अचानक उसका पत्र बंद हो गया। कुछ दिनों के बाद एक सरकारी चिट्ठी आई कि क्वान उत्तरी सीमा पर लड़ते हुए लापता हो गया है।

वान डीयम : फिर उसकी कोई खबर नहीं मिली ?

थीवान : नहीं, पूज्यवर !

वान डीयम : दुःखी मत हो, बेटी ! भगवान् बुद्ध बहुत दयालु हैं। उनकी करुणा की छाया में सब मंगल होगा।

थीवान : गाँव के कई लोग बड़ी दुःखद बातें करते हैं, पर मैं ध्यान नहीं देती। मुझे विश्वास है कि क्वान जीवित है और एक दिन अवश्य लौट कर आयेगा।

वान डीयम : धैर्य धरो बेटी ! महाप्रभु की इच्छा असंभव को संभव कर देती है। अब जा रहा हूँ। भगवान बुद्ध तुम्हारा मंगल करें।

(वान डीयम का प्रस्थान। थीवान फिर धान कूटने लगती है।)

(पुत्र डौंग का प्रवेश। वह एक पूरी बाँह की बुशशर्ट पहने हुए है। उसके एक हाथ में मछली पकड़ने की बंसी और दूसरे हाथ में एक मछली है।)

डौंग : माँ !

थीवान : डौंग ! आज तू बहुत सुबह नदी चला गया !

डौंग : हाँ देखो माँ, तुम्हारे लिए कितनी बड़ी मछली लाया हूँ !

(माँ के हाथ में मछली देता है)

थीवान : इतनी बड़ी मछली ! पर तूने पकड़ा कैसे ? डौंग, अब तो तू पूरा मछुआरा हो गया !

डौंग : ना माँ, इतनी बड़ी मछली मैं कैसे पकड़ता ! यह मछली तो मेरी बंसी तोड़ देती ! शायद मुझे भी पानी में खींच ले जाती ! यह मछली मुझे चाचा चो ने दी है।

थीवान : चाचा चो ! वह तुझे कहाँ मिला ?

डौंग : वे नदी किनारे मछली मार रहे थे। जब मैं लौट रहा था तो उन्होंने यह मछली दी। बोले, जाकर माँ को दे देना।

थीवान : देखो, अब आइंदा वान चो से कुछ न लेना। मुझे यह बिलकुल नापसंद है।

डौंग : लेकिन माँ···!

थीवान : बात यह है कि मुझे तुम्हारे हाथ की मछली पसंद है।

डौंग : मैं क्या करूँ, मुझसे सारी मछलियाँ बहुत डरती हैं। जहाँ मैं बंसी फेंकता हूँ, सब की सब भाग जाती हैं।

(थीवान हँसती है। प्यार से डौंग के सिर पर हाथ फेरती है)

थीवान : वाह रे मेरा बहादुर मछुआरा !

डौंग : माँ, चाचा चो कहते थे कि देश में लड़ाई फैलती जा रही है। बहुत जल्दी गाँव तक पहुँच जायेगी।

थीवान : यह सब झूठ है। लड़ाई कोई बच्चों का खेल है कि जब चाहा शुरू कर दिया ! वान चो बहुत बेपर की उड़ाता है।

डौंग : लेकिन माँ, चाचा चो ने यह बात शहर में सुनी है।

थीवान : नहीं, यह सब कुछ नहीं होगा !

डौंग : माँ, चाचा जी पिता जी के बारे में भी एक बात कह रहे थे।

थीवान : क्या कहता है वह झूठा गप्पी ?

डौंग : वह कह रहे थे कि हमारा पिता क्वान उत्तरी सीमा की लड़ाई में मारा गया है। अब वह लौट कर नहीं आयेगा।

थीवान : यह झूठ है ! यह झूठ है ! यह कभी नहीं हो सकता !

डौंग : पर माँ, चाचा चो कहते थे कि गाँव के सभी लोग इस बात को जानते हैं।

थीवान : चाचा चो! चाचा चो! वान चो अव्वल दर्जे का झूठा और मक्कार है। गाँव वाले भी इस बात को क्या जानते हैं! कौन कहता है कि क्वान मर गया! यह झूठ है! बहुत बड़ा झूठ है!

डौंग : माँ!

थीवान : मैंने सच्चे मन से भगवान् बुद्ध की पूजा की है। भगवान् ऐसा अनर्थ नहीं होने देंगे।

डौंग : माँ!

थीवान : जा अभी जा और यह मछली वान चो के मुँह पर फेंक आ। उससे कहना कि थीवान उससे कोई उपहार नहीं लेना चाहती। आज नहीं और कभी नहीं।

(डौंग मछली ले जाने को तैयार होता है तभी वान चो का प्रवेश)

(वान चो स्लीपिंग सूट जैसा वस्त्र पहने हुए है। सिर पर चटाई का हैट)

वान चो : श्रीमती थीवान का अभिनन्दन करता हूँ।

(थीवान सिर झुकाती है पर कुछ नहीं बोलती)

(डौंग झोपड़ी में जाता है)

वान चो : क्या मैं तुम्हारे अकारण क्रोध की वजह जान सकता हूँ?

थीवान : क्या मैं तुम्हारे अकारण आगमन की वजह जान सकती हूँ?

वान चो : नदी किनारे मछली पकड़ने गया था। लौटते समय सोचा कि तुम्हारा हाल-चाल पूछ लूँ। क्वान के बाद तुम्हारी कुशलता का दायित्व हम सब पर ही है, थीवान!

थीवान : क्वान के दायित्व को तुम खूब निभा रहे हो! मुझे तुम्हारे गलत प्रचार की भनक मिली है। तुम्हारे जैसे अभिभावक को दूर से ही नमस्कार!

वान चो : तुम्हारा क्रोध बिलकुल अकारण है, थीवान! मैंने जो कुछ

कहा है उस बात को सारा गाँव जानता है।

थीवान : पर क्वान के बारे में मैं तुमको या गाँव को साक्षी बनाना नहीं चाहती।

वान चो : आँख बन्द कर लेने से सचाई नहीं बदल सकती, थीवान ! क्वान को मरे कई वर्ष हो गये हैं और मरे हुए लोग कभी लौट कर नहीं आते।

थीवान : यह झूठ है ! मैं इसे नहीं मान सकती ! मेरी आत्मा कहती है कि क्वान जीवित है !

वान चो : मैं तुम्हारी भावनाओं को चोट नहीं पहुँचाना चाहता। मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि इतिहास कितना ही सुन्दर हो, केवल उसे लेकर नहीं जिया जा सकता। तुम्हारे सामने तुम्हारा वर्तमान है, भविष्य है।

थीवान : क्वान से अलग न मेरा कोई वर्तमान है, न भविष्य !

वान चो : देश की हालत तेजी के बिगड़ रही है। युद्ध की आग फैलती जा रही है। बहुत जल्दी हमारा गाँव भी इस आग की चपेट में आ जायेगा।

थीवान : यह सब तुम्हारे दिमाग की उपज है ! भिक्षु वान डीयम ने कहा है कि भगवान् बुद्ध की कृपा से अब इस देश में युद्ध नहीं होगा।

वान चो : भिक्षु वान डीयम ! (**व्यंग्यात्मक हँसी हँसता है**) वह इन बातों को क्या जानता है ! भिक्षु वान डीयम तो क्या स्वयं भगवान् बुद्ध भी अब इस देश के दुर्भाग्य को नहीं बदल सकते।

थीवान : यह सब घोर अश्रद्धा की बात है ! तुम्हें भले विश्वास न हो, मुझे महाप्रभु की करुणा में गहरी आस्था है।

वान चो : इस धरती पर अब प्रेम और करुणा का शासन नहीं है, थीवान ! शासन है बस घृणा और हत्या का ! अंगुलिमाल की कहानी जानती हो न ! भगवान् बुद्ध की बातों में अंगुलिमाल थोड़ी देर के लिए बंध गया हो पर उसका

स्वभाव नहीं बदला। उसे जब मौका मिलता है वह अपना नकाब उलट देता है और कटी हुई उँगलियों की माला पहनने लगता है।

थीवान : तुम कहना क्या चाहते हो, वान चो !

वान चो : थीवान, युद्ध एक अंधी शक्ति है जैसे हिन्दुओं के देवता शिव का तीसरा नेत्र खुल जाय और उस अजस्र आग में सब कुछ भस्म हो जाय। बुद्धिमानी तो इसमें है कि हम समय रहते चेतें और इस शाप से बचें !

थीवान : मैं कुछ नहीं समझी।

वान चो : जब समुद्र में ज्वार आता है तो लोग पीछे हट जाते हैं। मौत की अंधी आग को चूमने में कोई खूबी नहीं है। हमें अपने दामन को इस आग से बचाना चाहिए।

थीवान : कविता मत गढ़ो, वान चो ! साफ-साफ कहो।

वान चो : धैर्य से सुनो और ठंडे दिमाग से सोचो। गृहयुद्ध की चिनगारियाँ इस गाँव तक उड़ रही हैं। अगर हमने पहले कोई प्रबन्ध नहीं किया तो इस मौत की घाटी से निकलना असंभव हो जायगा।

थीवान : तुम इस गाँव को छोड़ देना चाहते हो, वान चो ! मगर फिर करोगे क्या ?

वान चो : हमें अगुलिमाल से सुलह करनी होगी। लड़ाई के दौरान काफी विदेशी सेनाएँ आ रही हैं। शहर में होटल और मदिरालय का धंधा खूब चल रहा है। हम भी वहाँ पीयास्टर और डालर कमा सकते हैं।

थीवान : बहुत-से लोग गाँव छोड़कर शहर में होटल का धंधा कर रहे हैं। अगर तुम्हें पसंद हो तो तुम भी वही कर सकते हो।

वान चो : मगर मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है। तुम्हारे बिना मैं कुछ नहीं कर सकूँगा।

थीवान : मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। इस दुराशा को मन में मत रखो, वान चो !

वान चो : मैं जीवन-भर तुम्हारी हिफाजत करूंगा। मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दूंगा।

थीवान : क्वान के जीवित रहते तुम ऐसी बात क्यों करते हो, वान चो ! मुझे ऐसी चर्चा से बहुत चोट पहुँचती है।

वान चो : तुम एक निरर्थक भावुकता में जी रही हो ! बन्दरिया अपने मरे हुए बच्चे को कई दिनों तक सीने से चिपकाये घूमती है। पर उससे बच्चे में जीवन-संचार नहीं होता !

थीवान : क्वान मेरे लिए उतना ही जीवित है, जितना मैं स्वयं। मैं तुमसे इस बात पर तर्क करना नहीं चाहती।

वान चो : अंधी आस्था से सचमुच तर्क नहीं किया जा सकता। पर युद्ध एक कड़वा सत्य है। धीरे-धीरे सब लोग गांव छोड़ देंगे। फिर तुम यहाँ अकेले रहकर क्या करोगी ?

थीवान : अगर ऐसा ही हो तो मैं अकेले गाँव में रहूँगी। नियम से भगवान् बुद्ध की पूजा करूंगी और अनन्त काल तक क्वान की प्रतीक्षा करूंगी।

वान चो : युद्ध के सैनिक तुम्हारी भावुकता की कद्र नहीं करेंगे। जानती हो युद्ध हरेक आदमी को एक जंगली जानवर बना देता है।

थीवान : तुम मेरा अपमान कर रहे हो, वान चो !

वान चो : मैं तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहता ! पर तुम समझती क्यों नहीं !

थीवान : मैं क्वान को नहीं भुला सकती। जीवन-भर नहीं।

वान चो : क्या तुम इस गाँव के बाहर रहकर क्वान को नहीं याद कर सकतीं। चलो हम ह्यू या सैगोन चलें। तुम क्वान की पूजा करना। मैं शपथ खाता हूँ कि मैं तुम्हारी आजादी में दखल नहीं दूंगा।

थीवान : यह नहीं हो सकता। कभी नहीं हो सकता। मैं अपने खेत, अपनी झोपड़ी, अपने गांव को नहीं छोड़ सकती। मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन क्वान यहाँ लौट कर आयेगा।

मुझे यहाँ न पाकर वह कितना दुखी होगा ! फिर मैं उसे कहाँ ढूँढूंगी। नहीं वान चो, मैं मर कर भी उसके लिए यहीं प्रतीक्षा करूँगी।

(सिसकती है)

वान चो : अच्छा अभी जा रहा हूँ, थीवान ! मेरी बातों पर विचार करना। जरूरत हो तो याद करना।

(थीवान कुछ नहीं बोलती)

(वान चो का प्रस्थान)

द्वितीय दृश्य

स्थान : वही गाँव लोकडीयन, वही पृष्ठभूमि

समय : छह महीने बाद; शाम पांच बजे

(थीवान बुद्ध मन्दिर के सामने पूजा कर रही है)

(भुनी मछली और चावल की शराब लेकर खोमचेवाले चौंग का प्रवेश। चौंग वियतनामी किसान का वस्त्र पहने हुए है। सिर पर चटाई की टोपी)

चौंग : (आवाज लगाता है) मछली की चड़चड़ी, चावल का पेय।

(चौंग मंच के बीच बहंगी रखकर बैठ जाता है)

(झोपड़ी से डौंग निकलता है। खोमचेवाले की तरफ देखकर थीवान के पास जाता है)

डौंग : माँ, बीस पीयास्टर दो। मछली की चड़चड़ी खाऊँगा।

थीवान : जरा ठहरो, मैं तुरन्त आती हूँ।

(थीवान पूजा समाप्त कर झोपड़ी में जाती है। अन्दर से कुछ पीयास्टर लाकर डौंग को देती है। डौंग मछली वाले के पास जाकर मछली खरीदता है)

(वियतनामी सिपाही वान काश का प्रवेश। वह सैनिक यूनीफार्म पहने हुए है। साथ में किट-बैग है)

वान काश : मछली की चड़चड़ी, चावल का पेय, गाँव में सब कुछ वही। कुछ भी नहीं बदला।

थीवान : कौन वान काश ! कब आये ? साल-भर में गाँव कितना बदलना चाहते हो, वान काश ?

वान काश : श्रीमती थीवान ! अभिनन्दन करता हूँ। अगर मुझसे पूछा जाय तो मैं एक महीने में गाँव को बिलकुल बदल दूँ ! मुझे फौज में गये साल-भर से अधिक नहीं हुआ पर हमारा कमांडर कहता है कि वान काश ! अगर तुम थोड़ा पहले आ जाते तो लड़ाई का रुख बिलकुल बदल जाता।

थीवान : अच्छा, तुम्हारा कमांडर ऐसा कहता है ! तब तो तुम बहुत बहादुर हो !

वान काश : तुम क्या, सब यही कहते हैं। जानती हो थीवान, मैं हूँ एक सिपाही; रैंक में बिलकुल जूनियर; मगर हाँ, कोई मुझे जमादार, हवलदार से कम नहीं समझता। सबको आर्डर देता रहता हूँ।

थीवान : अच्छा ऐसा ! आदमी तो वान काश तुम काम के हो, सिर्फ थोड़ा बेसुरे हो।

वान काश : हैं, बेसुरा ! ऐसा क्यों कहती हो, थीवान !

थीवान : अब चलती हूँ, वान काश ! फिर भेंट होगी !

(थीवान झोपड़ी में जाती है)

वान काश : (खोमचेवाले से) ओ खोमचेवाले, जरा एक प्लेट मछली देना। देखो बच्चा डांडी मत मारना। सिपाही की कमाई असली खून की कमाई होती है।

खोमचेवाला : अच्छा हवलदार साहब !

(खोमचेवाला वान काश को मछली की चड़चड़ी देता है।)

(वियतकाँग सैनिक थुआन का प्रवेश)

(थुआन भी फौजी वर्दी में है पर उसके वस्त्र मैले और फटे हुए हैं।)

थुआन : देखो मुझे भी एक प्लेट मछली दो।

वान काश : (थुआन को देखकर) अरे तू तो थुआन है न? बहुत दिनों पर दिखाई पड़ा।

थुआन : हाँ, इधर मैं ड्यूटी पर चला गया था।

वान काश : ड्यूटी पर! ओर यार, ये फौजी वर्दी कहाँ से मार लाया?

थुआन : यह मेरी वर्दी है। वान काश, मैं फौज में हूँ।

वान काश : फौज में! वाह, मेरे मिट्टी के शेर! यह मुँह ओर मसूर की दाल!

थुआन : क्यों वान काश, मैं क्या तुमसे कम लड़ सकता हूँ?

वान काश : अच्छा छोड़ यह सब! बता तू किस रेजीमेंट में है? क्रिश्चियन इनफैन्ट्री, नैवल यूनिट!

थुआन : नहीं, यह हमारी रेजिमेंट नहीं है। मेरी कंपनी का नाम है—आपरेशन नम्बर थर्टी टू।

थुआन : आपरेशन नम्बर थर्टी टू—ये भी किसी रेजीमेंट का नाम हुआ! बच्चा मुझसे उड़ता है! मैं उड़ती चिड़िया को पहचानता हूँ। अच्छा बता तेरा रैंक क्या है? तू तो नया रंगरूट होगा?

थुआन : नहीं!

वान काश : तब तू क्या जमादार है?

थुआन : नहीं!

वान काश : तब तू क्या हवलदार है?

थुआन : नहीं।

वान काश : तब गधा, तू क्या फोर स्टार जनरल है? बाप न मारे मेंढ़की, बेटा तीरंदाज!

थुआन : सुनो वान काश, जब तुम पूछते हो तो बताता हूँ—मैं हूँ गुरिल्ला स्क्वैड्रन में फारेस्ट इरेंगुलर!

वान काश : गुरिल्ला स्क्वैड! फारेस्ट इरेंगुलर! यह सब क्या बक

रहा है !

थुआन : हां, जरा ठीक से समझा वान काश ! मैं हूं नेशनल लिबरेशन आर्मी का सदस्य जिसे तुम वियतकौंग कहते हो।

वान काश : वियतकौंग ! तू नशे में तो नहीं बोल रहा है !

थुआन : मैं नशे में नहीं हूं। सुनो वान काश, तुम्हारी कठपुतली सरकार के दिन लद गये। अच्छा यही है कि तुम सब लाल झंडे के नीचे आ जाओ।

वान काश : मुझे सबक देता है ! गधा, गद्दार !

थुआन : गद्दार मैं हूं या तुम, बहुत जल्दी मालूम हो जायगा। वियतनाम के आकाश में बहुत जल्दी लाल सितारा चमकने वाला है।

वान काश : मिट्टी का भुनगा ! कबूतर ! तेरी यह मज़ाल ! तू अभी वान काश को नहीं जानता। साले, तेरा खून पी जाऊंगा ! चल चूहे, तेरी आज बस छुट्टी !

(थीवान का प्रवेश)

थीवान : हे-हे ! यह क्या कर रहे हो वान काश ! बुद्ध मंदिर के सामने यह खून-खराबा ! बंदूक नीचे करो ! यह ठीक नहीं है।

वान काश : (बंदूक झुकाकर) अच्छा जा छोकरे, तेरी किस्मत तेज़ है। तू आज बच गया !

(थुआन जाता है)

थीवान : यह तो अपने ही गांव का थुआन है !

वान काश : हां, वही है। साला वियतकौंग में दाखिल हो गया है।

थीवान : पर यह तो अपना पड़ोसी है !

वान काश : लड़ाई के समय भाईचारा नहीं चलता, थीवान ! यह गधा जरूर खुफिया ही होगा।

(बार-बार बंदूक चलने की आवाज। बमवर्षा की धमक। रोने की आवाज)

थीवान : (घबराकर) यह सब क्या है ! लगता है कि गांव पर हमला

हो गया है। शायद कोई मर गया है !

वान काश : मैं अभी देखकर आता हूँ।

(वान काश जाता है। थीवान परेशान-सी टहलती है। डौंग का प्रवेश)

डौंग : यह सब क्या है माँ !

थीवान : ठीक से पता नहीं चलता। लगता है कि गाँव के चारों तरफ गोलाबारी हो रही है।

डौंग : माँ, चाचा चो कहते थे कि लड़ाई बहुत जल्दी गाँव तक पहुँच जायगी।

थीवान : चुप रह ! बिना मतलब की बात न कर।

(वान काश का प्रवेश)

वान काश : लड़ाई गाँव तक पहुँच गई ! पास के जंगलों में वियतकौंग के सैनिक घूम रहे हैं।

थीवान : तो लड़ाई सचमुच दरवाज़े तक पहुँच गयी ! अच्छा वान काश, यह रोना-पीटना किस बात का था ?

वान काश : पागल वान डीयम मारा गया !

थीवान : वान डीयम ! कौन वान डीयम ?

वान काश : अरे वही बौद्ध भिक्षु ! वियतकौंग के सैनिक गांव के मुखिया को पकड़ने गये। ये हजरत वहाँ भी लेक्चर झाड़ने लगे। बस एक गोली में लुढ़क गये।

थीवान : भिक्षुवर मारे गये ! यह कितनी भयानक बात है !

वान काश : अभी क्या, यह तो भूमिका है। इस गाँव पर मौत का साया पड़ गया। अच्छा अब चलता हूँ, थीवान !

(वान काश का प्रस्थान। डौंग झोपड़ी में जाता है। थीवान बुद्ध मन्दिर के पास जाकर मौन आराधना करती है।)

(वान चो का प्रवेश)

(वह एक बहंगी में घर का सामान लिये है)

वान चो : थीवान !

थीवान : कौन वान चो ! यह क्या, गाँव छोड़कर जा रहे हो ?

वान चो : मैं ही क्यों, सारा गाँव जा रहा है, थीवान !

थीवान : अपना घर-बार, खेत-खलिहान छोड़ कर जाना क्या ठीक है ? एक आँधी आयी है, थोड़े दिनों में थक कर लौट जायगी ।

वान चो : नहीं थीवान, यह तूफान आसानी से नहीं लौटेगा । पिछली सभी लड़ाइयों से यह संघर्ष कहीं अधिक भयंकर है ।

थीवान : हो सकता है ! महाप्रभु की इच्छा !

वान चो : लेकिन तुमने क्या तय किया ?

थीवान : मैं नहीं जा सकूँगी, वान चो ! तुम मेरी फिक्र मत करो !

वान चो : लेकिन थीवान, इस धधकती हुई आग को देखो । यह सिर्फ आत्महत्या है ।

थीवान : प्रबल आँधी में जलने वाले दीपक में बहुत आत्मविश्वास की जरूरत होती है । मुझमें वह आस्था है, वान चो !

वान चो : अच्छा अब जा रहा हूँ, थीवान ! चलते समय तुम्हें क्या परामर्श दूँ, समझ में नहीं आता । मेरी शुभकामना तुम्हारे साथ रहेगी ।

थीवान : धन्यवाद, लेकिन कहाँ जा रहे हो ?

वान चो : अभी ह्यू जा रहा हूँ । उसके बाद सैगौन जाऊँगा । शाप-ग्रस्त मनुष्य आगे-आगे भाग रहा है । युद्ध पीछा करता जा रहा है ! देखूँ यह यात्रा कहाँ खत्म होती है !

थीवान : महाप्रभु तुम्हारा मंगल करें ।

(वान चो का प्रस्थान । थीवान बुद्ध मन्दिर के पास धम्मपद का पाठ करती है)

(प्रकाश धीरे-धीरे कम होता है । बंदूक और बमबारी की आवाजें । बायें नेपथ्य से गाँव के लोगों का एक काफिला स्टेज से गुजरता है । कम प्रकाश के कारण उनका छाया जैसा जुलूस दिखाई पड़ता है । थीवान का धम्मपद-पाठ सुनाई पड़ता है ।)

तृतीय दृश्य

स्थान : वही गाँव लोकडियन, वही पृष्ठभूमि

समय : एक महीने बाद, शाम पाँच बजे।

(बंदूक चलने की लगातार आवाज़ें। आवाज़ थोड़ा थमने पर थीवान झोपड़ी से बाहर निकलती है। पीछे से डौंग आता है)

(थीवान एक पत्थर की चट्टान पर बैठती है)

डौंग : माँ, बहुत भूख लगी है।

थीवान : धैर्य रखो डौंग ! तुम तो बहुत समझदार हो !

डौंग : पर माँ, हमने परसों खाया था ! कल कुछ नहीं और आज भी कुछ नहीं।

थीवान : क्या करूँ ! खेत में धान तैयार है पर हम उसे काट नहीं सकते। आज अँधियारी रात होगी। शाम ढलने पर एक-दो बोझा काट लाऊँगी।

डौंग : माँ, गाँव के सब लोग चले गये हैं। अब यहाँ बिलकुल मन नहीं लगता।

थीवान : घबराओ मत, मेरे लाल ! प्रभु की कृपा से हमारे दुःख जल्दी ही कट जायेंगे।

(एक वियतकौंग कमांडर और दो सैनिकों का प्रवेश)

कमांडर : हाल्ट ! हैंड्स् अप !

(थीवान घबराकर हाथ उठा देती है। डौंग भी देखा-देखी हाथ उठा देता है)

कमांडर : कौन हो तुम ? यहाँ क्या कर रही हो ?

थीवान : मेरा नाम थीवान है। यह मेरा पुत्र डौंग है। मेरा पति क्वान लड़ाई में गया हुआ है।

कमांडर : लड़ाई में ? वह किसकी तरफ से लड़ता है ?

थीवान : यह मैं नहीं जानती।

एक सैनिक : सर, लगता है कि इसका पति सरकारी फौज में है। और यह औरत अमेरिका के लिए जासूसी कर रही है।

दूसरा सैनिक : हो सकता है कि यह अमरीकी फौज का मन बहलाती हो !

थीवान : क्या बकते हो ! तुम्हें शरम नहीं आती !

कमांडर : झोपड़ी की तलाशी ले लो।

(सैनिक झोपड़ी में घुस कर तलाशी लेता है)

पहला सैनिक : सर, झोपड़ी में कोई नाजायज्ञ सामान नहीं है।

कमांडर : सच बोलो। तुम्हारे यहाँ रहने का क्या कारण है ?

थीवान : यह मेरा घर है। मैं अपने घर में रहती हूँ। क्या यह कारण काफी नहीं है ?

कमांडर : पर दूसरे सभी ने गाँव छोड़ दिया है।

थीवान : उन्होंने अपनी मर्जी से नहीं छोड़ा। उन्हें छोड़ना पड़ा।

कमांडर : तुमने वियतकाँग का नाम सुना है ?

थीवान : हाँ, कभी-कभी सुना है।

कमांडर : क्या तुम जानती हो कि हम किन आदर्शों के लिये लड़ रहे हैं ?

थीवान : नहीं, मैं नहीं जानती।

कमांडर : मूर्ख औरत, क्या तू इतना भी नहीं जानती कि हम वियतनाम की आजादी के लिए लड़ रहे हैं। अमेरिका और उसके गुर्गों ने इस देश को गुलाम बना लिया है। हम उन्हें देश के बाहर निकालना चाहते हैं।

थीवान : आप लोग आजादी के लिए लड़ रहे हैं ! यह तो बहुत अच्छी बात है !

कमांडर : सुनो थीवान, तुम भी आजादी की लड़ाई में हाथ बंटा सकती हो। तुम हमारे कैम्प में चलो। हम तुम्हें ट्रेनिंग देंगे। तुम अमरीकी कैम्प में जासूसी कर हमारी मदद कर सकती हो।

थीवान : मैं चाह कर भी यह सब न कर सकूंगी। फिर मैं अपने घर अपने गाँव को नहीं छोड़ सकती।

पहला सैनिक : सर, यह औरत सिर्फ मूर्ख ही नहीं, जिद्दी भी है।

कमांडर : सुनो श्रीमती थीवान, अगर तुम हमारी सहायता नहीं करतीं तो हम तुम्हारी सुरक्षा का कोई आश्वासन नहीं दे सकते।

थीवान : मगर मैं आप लोगों के बीच में कहाँ पड़ती हूँ?

कमांडर : यह युद्ध-क्षेत्र है। तुम यहाँ हमारी मर्जी के खिलाफ़ नहीं रह सकतीं।

थीवान : लेकिन यह मेरा घर है।

कमांडर : हम तुमसे बहस नहीं करना चाहते। अच्छा यही है कि तुम इस गाँव को जल्दी से जल्दी छोड़ दो।

(कमांडर और वियतकौंग सैनिकों का प्रस्थान)

(बंदूक और बमबारी की आवाज़ें)

(एक अमेरिकन सैनिक अफसर और कुछ वियतनामी सैनिकों का प्रवेश)

अ० अफसर : हाल्ट!

(थीवान ठिठक जाती है)

अ० अफसर : इधर वियतकौंग का सोल्जर आया?

थीवान : हाँ, अभी कुछ आदमी आये थे। वियतकौंग का नाम ले रहे थे।

अ० अफसर : वह सब किधर गया?

थीवान : उधर जंगल में गये।

अ० अफसर : तुमसे क्या बोलता था?

थीवान : हमसे कहता था कि हम वियतनाम की आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं। तुम हमारी मदद करो।

अ० अफसर : आज़ादी के लिए लड़ता हाय—ब्लडी बैस्टर्ड्स! तुम क्या बोला?

थीवान : मैंने कहा कि मैं यह काम नहीं कर सकती!

अ० अफसर : वेरी गुड! तुम बहुत ठीक बोला! तुम्हारा नाम?

थीवान : मेरा नाम थीवान है। यह मेरा लड़का डौंग है। मेरा पति

फौज में है।

अ० अफसर : तुम्हारा 'हसबेंड' इस समय कहाँ हाय ?

थीवान : पिछली बार सुना था कि वह उत्तरी सीमा पर लड़ता है !

अ० अफसर : तुम्हारा हसबेंड नार्थ फ्रंटियर पर लड़ता हाय ! वेरी गुड ! तब तो तुम अपना आदमी हाय !

एक सिपाही : सर, हम जंगल में वियतकौंग का सूराग लेते हैं।

अ० अफसर : ठीक है, जाओ !

(सैनिक जाते हैं। डौंग झोपड़ी में जाता है)

अ० अफसर : मिसेज़ वान, तुम बहुत ब्रेव गर्ल हाय। तुम हमारी मदद करने सकता।

थीवान : मैं क्या कर सकती हूँ ?

अ० अफसर : तुम बहुत यूसफुल वर्क कर सकता है। तुम जंगल में जाकर वियतकौंग का सीक्रेट लाने सकता।

थीवान : नहीं, मुझसे यह काम नहीं होगा।

अ० अफसर : हम तुमको बहुत पीयास्टर देता।

थीवान : लेकिन मैं यह काम नहीं कर सकूँगी।

अ० अफसर : लुक मिसेज़ वान, हम वियतनाम में कम्यूनिज्म रोकता। अगर हम हार जाता तो एशिया से डेमोक्रेसी खत्म हो जाता। तुम डेमोक्रेसी के माने समझता है ?

थीवान : नहीं, हम डेमोक्रेसी के माने नहीं जानती। सुना है, बहुत अच्छी चीज़ है।

अ० अफसर : तुम बहुत इंटेलिजेंट है। तुम डेमोक्रेसी के 'कॉज' में खूब लड़ता।

थीवान : मैं डेमोक्रेसी नहीं समझती। मैं लड़ना भी नहीं जानती। मैंने जीवन-भर केवल खेत जोता है, धान कूटा है और बच्चा पोसा है।

अ० अफसर : ह्वाट ए सिली वुमन।

(वियतनामी सैनिकों का प्रवेश)

एक सैनिक : सर, लगता है कि वियतकौंग के गुरिल्ला जंगल में घुस

गये।

अ० अफसर : आल राइट ! (थीवान से) लुक मिसेज़ वान, तुम हमारा बहुत टाइम वेस्ट करता। अगर तुम हमसे 'कोआपरेट' नहीं करता तो यहाँ क्यों बैठता !

थीवान : लेकिन यह हमारा घर है। यह हमारा खेत है। मैं इसे छोड़कर कहाँ जा सकती हूँ !

अ० अफसर : नो, यह वार एरिया है। दो आर्मीज़ के बीच का 'नो मैंस लैंड'। यह किसी का जमीन नहीं है।

थीवान : मगर यह हमारी जमीन है !

अ० अफसर : लुक मिसेज़ वान, अगर तुम हमारी मदद नहीं करता तो तुम इस गाँव को छोड़ देता। जल्दी से जल्दी ! नो आरग्यूमेंट्स् !

(अमरीकी अफसर और सैनिक का प्रस्थान)

(डौंग झोपड़ी के बाहर आता है)

डौंग : माँ, अब भूख नहीं बरदाश्त हो रही है ! बहुत भूख लगी है।

थीवान : अच्छा बेटे, मेरी हँसिया ले आओ। अंधेरा हो रहा है। अब मैं खेत जाऊँगी।

डौंग : आज मैं भी चलूँगा, माँ !

थीवान : नहीं बेटे, बाहर निकलने पर कदम-कदम पर खतरा है।

डौंग : नहीं माँ, मुझे कुछ नहीं हो सकता। मुझे सब मालूम है। जरा-सा आवाज़ होते ही ज़मीन पर लेट जाऊँगा।

थीवान : जिद मत करो डौंग, मैं अभी आती हूँ।

डौंग : नहीं माँ, तुम चली जाओगी तो मैं अकेला बहुत डरूँगा।

थीवान : अच्छा चलो, लेकिन पता नहीं क्यों मेरा मन बहुत घबरा रहा है।

डौंग : नहीं माँ, तुम बिलकुल मत घबराओ। और माँ, आज मैं भी एक बोझा काट कर लाऊँगा।

थीवान : अच्छा जाकर हँसिया लाओ !

(डौंग झोपड़ी में से दो हँसिया लाता है)

थीवान : कितना अंधेरा है ! हाथ को हाथ नहीं सूझता ! न जाने क्या होगा !

डौंग : चलो माँ, मुझे रास्ता मालूम है। हम खेत पर पहुँच जायेंगे।

(हवा का साँय-साँय का स्वर। पास में बंदूक चलने की आवाज़ । थीवान ठिठक जाती है)

डौंग : चलो माँ, ये गोलियाँ तो हर समय चलती रहती है !

(थीवान और डौंग चलने को प्रस्तुत होते हैं। तभी बायें नेपथ्य से 'हाल्ट' की आवाज़। थीवान और डौंग ठिठक जाते हैं। तभी मंच पर बंदूक चलने की आवाज़ सुनाई पड़ती है)

डौंग : (आर्तनाद) माँ (खून से लथपथ गिर पड़ता है । थीवान दौड़कर जाती है)

थीवान : क्या हुआ, डौंग ! हाय इतना खून···मेरे बच्चे !

डौंग : माँ, पीठ में बहुत दर्द है। लगता है कि गोली लग गयी है।

थीवान : हाय···हाय···इतना बड़ा घाव ! मैं अभी अस्पताल चलती हूं ! डौंग ! डौंग !

डौंग : माँ ! (बेहोश हो जाता है)

(थीवान डौंग को उठाती है)

(वियतकौंग कमाँडर और सैनिक का प्रवेश)

कमांडर : हाल्ट !

(थीवान डौंग को जमीन पर रख देती है)

थीवान : मैं हूँ थीवान ! मेरा बच्चा गोली से घायल हो गया है। यह तुम्हारा फायर था न ?

कमांडर : हो सकता है ! जहाँ आग लगी हो वहाँ ऐसी कितनी ही चिनगारियाँ उड़ती रहती हैं !

थीवान : एक छोटे-से बच्चे पर गोली चलाने में क्या बहादुरी है ! तुम्हारी आज़ादी के लिए इस मासूम का खून जरूरी था !

कमांडर : मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि इस गाँव को छोड़ दो। यह

वार एरिया है—हमारी और अमेरिकन फौज के बीच का 'नो मैंस लैंड' !

थीवान : यह 'नो मैंस लैंड' नहीं है। यह मेरा घर है। यह मेरा खेत है। इस धरती में हमारा खून-पसीना सना हुआ है। यह 'नो मैंस लैंड' कैसे हो सकता है !

कमांडर : सुनो, श्रीमती थीवान, तुम्हारी सुरक्षा इसी में है कि तुम जल्दी से जल्दी इस गांव को छोड़ दो।

(वियतकौंग कमांडर और सैनिक तेजी से लौट जाते हैं। थीवान डौंग को उठाकर दाहिने नेपथ्य की ओर बढ़ती है। बंदूक चलने की आवाज़। डौंग बहुत जोर से 'आह' करता है। थीवान डौंग को ज़मीन पर रख देती है।)

थीवान : क्या हुआ ? डौंग, डौंग, डौंग !

(अमेरिकन अफसर और सैनिक का प्रवेश)

अ० अफसर : कौन, मिसेज़ वान ?

थीवान : यह गोली तुमने चलाई है ?

अ० अफसर : हमने समझा कि कोई बियतकौंग 'सोल्जर' अंधेरे में ' 'मूव' कर रहा है। आई ऐम सॉरी मिसेज़ वान !

थीवान : खैर, तुम्हारी डेमोक्रेसी सुरक्षित हो गयी न ! कृपया हटो ! मेरा बच्चा बुरी तरह घायल हो गया है ! मैं इसे अस्पताल ले जा रही हूं !

अ० अफसर : तुम्हारे बेबी को हम देखता। फर्स्ट एड देने सकता।

(अमेरिकन अफसर झुककर बच्चे की नाड़ी देखता है। फिर उसे छोड़ देता है)

अ० अफसर : सौरी, मिसेज़ वान !

थीवान : क्यों क्या हुआ ? बोलो, क्या हुआ ?

अ० अफसर : योर बेबी इज़ डेड ! दुनिया से चला गया।

थीवान : क्या कहते हो ! डौंग मर गया ! यह नहीं हो सकता। यह कभी नहीं हो सकता ! यह झूठ है ! प्रभु मुझे इतना बड़ा

दंड कभी नहीं देंगे। डौंग ! डौंग ! उठो मेरे बच्चे ! मैं अभी खेत जाती हूं ! कई बोझा धान काट कर लाती हूं !··· मेरा बच्चा भूखा था ! वह भूखा चला गया !

(सिसकती है)

अ० अफसर : हमको बड़ा सदमा, मिसेज़ वान ! तुम अब यह गांव छोड़ देता ! तुम्हारी जान का खतरा होता ! यह वार-एरिया हाय—दो आर्मीज़ के बीच का 'नो मैंस लैंड' !

थीवान : (उठकर) हां, यह सचमुच 'नो मैंस लैंड' है ! यह गांव, यह ज़मीन, यह खेत—सब मेरे लिए 'नो मैंस लैंड' बन गये हैं। मैं अब इस गांव को जरूर छोड़ दूंगी !

(थीवान झुककर थोड़ी-सी मिट्टी उठा लेती है)

थीवान : इस मिट्टी को देख रहे हो न ! जंग के बीच जली हुई बंजर धरती—अब इस धरती की कोख सुलग रही है ! धरती मां बांझ हो गयी है। अब इस ज़मीन में कुछ नहीं जन्मेगा ! कभी कुछ नहीं होगा !

अ० अफसर : गौड का मर्जी, मिसेज़ वान !

थीवान : तुम सब बहुत ऊँची-ऊँची बात के लिए लड़ रहे हो ! वे आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं ! तुम डेमोक्रेसी की रक्षा कर रहे हो ! मैं अपना खेत छोड़ रही हूं ! तुम दोनों इस जमीन पर आखिरी फैसला कर लो !

अ० अफसर : वैरी सैड इंसीडेंट मिसेज़ वान !

थीवान : डौंग की मौत से सिर्फ मेरे सपने ही नहीं मरे, मेरा समूचा भविष्य मर गया है ! मेरा विश्वास भी खत्म हो गया है ! मुझे लगता है कि अब क्वान भी कभी लौट कर नहीं आयेगा ! गांव वाले ठीक कहते थे, क्वान मर गया है ! वह सचमुच कई साल पहले मर गया था ! उसका इंतज़ार महज़ एक पागलपन था !

(थीवान डौंग को उठा लेती है और चलने को तैयार होती है। तभी थीवान के पति क्वान का

प्रवेश। क्वान के बदन पर कई पट्टियाँ हैं। वह बैसाखी पर चलता है)

थीवान : (पहचानती हुई) कौन ! तुम ! अरे यह तो क्वान है ! क्वान ! क्वान ! कमांडर साहब, यह मेरा पति क्वान है !

क्वान : हाँ, मैं हूँ क्वान ! जिन्दगी और मौत के गलियारे में भटकता-भटकता आज फिर अपने गाँव पहुँच गया।

थीवान : तुम बहुत देर करके आये क्वान ! देखो लड़ाई की आग में हमारा सब कुछ खत्म हो गया ! हमारा घर, हमारा बच्चा !

क्वान : यह किसकी लाश है, थीवान ! इसे फेंक दो ! इसे जल्दी फेंक दो !

थीवान : यह हमारा बच्चा डौंग है ! गोलियों की बौछार के बीच इसने दम तोड़ दिया।

क्वान : नहीं थीवान, इस मुर्दे को फेंक दो ! मैं अब और मौत नहीं देख सकता ! इसे जल्दी फेंक दो।

थीवान : पर यह हमारे बच्चे डौंग का मृत शरीर है ! तुम भूल गए हो ! ठीक से पहचानो, क्वान !

क्वान : सभी मुर्दे एक जैसे होते हैं ! थीवान, जिन्दा आदमियों का चेहरा अलग-अलग होता है ! जो मरता है वह किसी न किसी का पुत्र, किसी न किसी का भाई, किसी न किसी का पिता होता है। ये सारे रिश्ते उमर के रिश्ते हैं। मरने पर हरेक आदमी बेनाम-बेशिनाख्त हो जाता है !

थीवान : तुमको क्या हो गया है, क्वान !

क्वान : लड़ाई हर जगह मुर्दों की खेती कर रही है। यह फसल अब जंगली घास की तरह फैलती जा रही है। कटे हुए हाथ-पैर, औंधे चेहरे, फटी हुई आंतें जमीन को ढकती जा रही हैं। तुमने इंसानी ठठरियों को देखा है, थीवान ! जंग में जली काली जमीन पर गोरी-गोरी ठठरियों का जुलूस बढ़ता जा रहा है···हीरोशिमा की आणविक मौत में मरे हुए लोग जिन्दा हो गए हैं···इन प्रेतों ने नाचना

शुरू कर दिया है…डिंग-डौंग,…डिंग-डौंग…डिंग-डौंग !

(क्वान नाचने का प्रयत्न करता है। वह चक्कर खाकर गिर पड़ता है)

थीवान : क्वान, उठो क्वान !

(थीवान क्वान को उठाती है)

क्वान : नहीं थीवान, अब मैं और मौत का चेहरा नहीं देखना चाहता। क्या इस गाँव में कोई जिन्दा आदमी नहीं है ? क्या यहाँ सब मर गए हैं ?

थीवान : क्वान ! होश में आओ क्वान !

क्वान : मैं अब और नहीं सह सकता ! मैं बहुत थक गया हूँ। घर चलो !

अ० अफसर : यू आर क्रेजी ब्वाय ! यह वार एरिया है ! तुम यहाँ नहीं बैठने सकता ।

क्वान : कौन हो तुम ? तुम हमें हुक्म देने वाले कौन हो ?

अ० अफसर : मैं एरिया कमांडर हूँ। तुमको यह एरिया वेकेट करना होगा ।

क्वान : तुम हमको घर छोड़ने का आर्डर देते हो ! जानते हो हमने इस झंडे के लिए कितनी कुर्बानी की है। इस शरीर के अंग-अंग में न जाने कितनी गोलियाँ पिरोयी गयी हैं। पर अब सोचता हूँ कि यह सारी कुर्बानी बेकार थी। ये सारी लड़ाइयाँ बेकार हैं। ये सारे झंडे खून में रंगे हुए हैं। और सुनो कमांडर, तुम्हारे सारे विजय-स्मारक इंसान की ठठरियों पर खड़े किये गये हैं।

अ० अफसर : तुम बहुत पागल। तुमको इलाज का जरूरत ।

क्वान : हाँ, हम जरूर पागल हैं। इस लड़ाई में सब कुछ खोकर पागल बने हैं। चलो थीवान, हम इस पागल परम्परा को और आगे बढ़ायेंगे। हम इस गाँव को छोड़ देंगे।

थीवान : लेकिन क्वान, हम जायेंगे कहाँ ?

क्वान : दूर, बहुत दूर ! यह एक पागल तलाश है। हम उस धरती

को खोज निकालेंगे जहाँ आकाश से हर समय आग नहीं बरसती हो, जहाँ मौत हर नुक्कड़ पर आदमी का इंतजार न करती हो···जहाँ अब भी हरा धान लहलहा रहा हो···! हम उस धरती को खोज निकालेंगे और फिर से जिंदगी शुरू करेंगे !

थीवान : चलो क्वान।

(थीवान डौंग की लाश उठाकर चलती है। क्वान थीवान के हाथों से डौंग के शव को ले लेता है। वह डौंग का चुम्बन लेता है। दोनों चलते-चलते फ्रीज हो जाते हैं)

(गोलियों के चलने की आवाज़)

□□